पु•ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-9

Hindi

Specimen Copy

S.A-2

2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अक्तूबर	वैज्ञानिक चेतना के वाहक	धिरंजन मलवे
०२		पद्य पाठ-६-कीचड़	काका कालेलकर
०३		पाठ-१३-गीत अगीत	रामधारी दिनकर
०३		संचयन पाठ-हामिद खां	एस.के पोटटेकाट
	नवंबर	गद्य पाठ-७-धर्म की आड़	गणेशशंकर
०४	नवंबर	पाठ-15-नए इलाके में ---	अरूण कमल
०५		संचयन पाठ-६-दीये जल उठे	मधुकर उपाध्याय
०७	दिसम्बर	पाठ-८-शुक्र तारे के समान	स्वामी आनंद
		व्याकरण –विरामचिह्न संधि शुद्ध अशुद्ध वर्तनी	

पाठ-5- वैज्ञानिक चेतना के वाहक
चंद्रशेखर वेंकट रामन

लेखक परिचय

लेखक - धीरंजन मालवे

जन्म - 1952

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन प्रस्तुत पाठ 'वैज्ञानिक चेतना के वाहक रामन्' में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रथम भारतीय वैज्ञानिक के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया गया है। लेखक कहता है कि सन् 1921 की बात है, जब रामन् एक बार समुद्री यात्रा कर रहे थे। रामन् को जहाज के डेक पर खड़े होकर नीले समुद्र को देखना, प्रकृति को प्यार करना अच्छा लगता था। उनके अंदर एक वैज्ञानिक की जानने की इच्छा भी उतनी ही मज़बूत थी। लेखक कहता है कि यही जानने की इच्छा के कारण उनके मन में सवाल उठा कि 'आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है? कुछ और क्यों नहीं?' रामन् सवाल का जवाब ढूँढने में लग गए। जवाब ढूँढते ही वे संसार में प्रसिद्ध हो गए। रामन् का जन्म 7 नवंबर सन् 1888 को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर में हुआ था। रामन् के पिता रामन् को बचपन से ही गणित और फ़िज़िक्स पढ़ाते थे। लेखक कहता है कि रामन् मस्तिष्क विज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लिए बचपन से ही बेचैन रहता था। अपने कॉलेज के समय से ही उन्होंने अनुसंधान के कार्यों में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था। उनकी दिली इच्छा तो यही थी कि वे अपना सारा जीवन अनुसंधान के कामों को ही समर्पित कर दें, मगर उन दिनों अनुसंधान के कार्य को पूरे समय के कैरियर के रूप तेज़ बुद्धि वाले में अपनाने की कोई खास व्यवस्था नहीं थी। रामन् अपने समय के अन्य तेज़ बुद्धि वाले छात्रों की ही तरह भारत सरकार के आय-व्यय से संबंधित विभाग में अफसर बन गए। लेखक कहता है कि रामन ने कलकत्ता में सरकारी नौकरी करते हुए भी अपने स्वाभाव के अनुसार अनुसंधान के कार्य के प्रति अपने झुकाव को बनाए रखा। दफ़्तर से समय मिलते ही वे लौटते हुए बहू बाजार आते थे, वहाँ 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस' की प्रयोगशाला थी। लेखक कहता है कि यह प्रयोगशाला अपने आपमें एक अनूठी संस्था थी, जिसे कलकत्ता के एक डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार ने वर्षों की कठिन मेहनत और लगन के बाद खड़ा किया था। लेखक कहता है कि इस संस्था का उद्देश्य देश में वैज्ञानिक चेतना का विकास करना था। अपने महान् उद्देश्यों के बावजूद इस संस्था के पास औजारों की बहुत अधिक कमी थी। लेखक कहता है कि उन्हीं दिनों रामन वाद्ययंत्रों की ओर भी आकर्षित हुए। पश्चिमी देशों को भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया लगते थे और रामन ने वैज्ञानिक सिद्धांतो के आधार पर पश्चिमी देशों के इस संदेह को तोड़ने की कोशिश की कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया हैं। लेखक कहता है कि उन्हीं दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद निकले हुए थे। मुखर्जी महोदय ने रामन् के सामने प्रस्ताव रखा कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद स्वीकार कर लें। रामन् के लिए यह एक कठिन निर्णय था क्योंकि लेखक

कहता है कि उस ज़माने के हिसाब से वे एक अत्यंत प्रतिष्ठित सरकारी पद पर थे, जिसके साथ मोटी तनख्वाह और अनेक सुविधाएँ जुड़ी हुई थीं। उन्हें नौकरी करते हुए दस वर्ष बीत चुके थे। ऐसी हालत में सरकारी नौकरी छोड़कर कम वेतन और कम सुविधाओं वाली विश्वविद्यालय की नौकरी में आने का फैसला करना रामन के लिए बहुत हिम्मत का काम था।लेखक कहता है कि रामन् सरकारी नौकरी की सुख-सुविधाओं को छोड़ सन् 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की नौकरी में आ गए थे। सन् 1921 में जब रामन समुद्र-यात्रा कर रहे थे तो उस समय जब रामन् के मस्तिष्क में समुद्र के नीले रंग की वजह का सवाल बार-बार उठने लगा, तो उन्होंने इस दिशा में कई प्रयोग किए, जिसका परिणाम रामन् प्रभाव की खोज के रूप में सभी के सामने आया। लेखक कहता है कि रामन् ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। एकवर्णीय प्रकाश की किरणों में सबसे अधिक ऊर्जा बैंजनी रंग के प्रकाश में होती है। बैंजनी के बाद क्रम के अनुसार नीले, आसमानी, हरे, पीले, नारंगी और लाल रंग का नंबर आता है। इस प्रकार लाल-रंग की प्रकाश की ऊर्जा सबसे कम होती है। आइंस्टाइन से पहले के वैज्ञानिक प्रकाश को तरंग के रूप में मानते थे, मगर आइंस्टाइन ने ही सबसे पहले यह बताया था कि प्रकाश बहुत ही छोटे छोटे कणों की तेज़ धारा के समान है। इन बहुत ही छोटे छोटे कणों की तुलना आइंस्टाइन ने बुलेट से की और इन्हें 'प्रोटोन' नाम दिया। लेखक कहता है कि रामन् के प्रयोगों ने आइंस्टाइन की धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया, क्योंकि एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन यह साफतौर पर प्रमाणित करता है कि प्रकाश की किरण बहुत ही तेज़ गति के सूक्ष्म कणों के प्रवाह के रूप में व्यवहार करती है। लेखक कहता है कि रामन् की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज आसान हो गया। पहले इस काम के लिए अवरक्त स्पेक्ट्रम विज्ञान का सहारा लिया जाता था। लेखक कहता है कि यह मुश्किल तकनीक है और गलतियों की संभावना बहुत अधिक रहती है। रामन् की खोज के बाद पदार्थों के अणुओं की और परमाणुओं की बनावट के अध्ययन के लिए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाने लगा। यह तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर, पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक सही-सही जानकारी देती है। इस जानकारी की वजह से पदार्थों का प्रयोगशाला में मिलान करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का बनावटी रूप से निर्माण करना संभव हो गया है।लेखक कहता है कि रामन् प्रभाव की खोज ने रामन् को विश्व के सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। रामन के जीवन में अब तो पुरस्कारों और सम्मानों की तो जैसे झड़ी-सी लगी रही। सन् 1954 में रामन् को देश के सबसे बड़े सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। लेखक कहता है कि रामन् नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक थे। लेखक कहता है कि भारतीय संस्कृति से रामन् को हमेशा ही गहरा लगाव रहा। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा अखंडित रखा अर्थात उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को नष्ट नहीं होने दिया। लेखक कहता है कि रामन विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए करेंट साइंस नामक एक पत्रिका का भी संपादन करते थे। रामन् प्रभाव केवल प्रकाश की किरणों तक ही

सिमटा नहीं था; उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रकाश की किरणों से पूरे देश को प्रकाशित और प्रभावित किया। उनकी मृत्यु 21 नवंबर सन् 1970 के दिन 82 वर्ष की आयु में हुई। लेखक कहता है कि रामन् वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने हमें हमेशा ही यह संदेश दिया कि हम अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन एक वैज्ञानिक दृष्टि से करें। तभी तो उन्होंने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की किरणों की चमक के अंदर से वैज्ञानिक सिद्धांत खोज निकाले। हमारे आसपास ऐसी न जाने कितनी ही चीज़े बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं। लेखक कहता है कि हमें केवल ज़रूरत है रामन् के जीवन से प्रेरणा लेने की और प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करने की।

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन प्रश्न अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए -

प्रश्न 1 - कॉलेज कि दिनों में रामन की दिली इच्छा क्या थी?

उत्तर - कॉलेज के दिनों में रामन की दिली इच्छा थी कि अपना पूरा जीवन शोधकार्य को समर्पित कर दें। लेकिन उस जमाने में शोधकार्य को एक पूर्णकालिक कैरियर के रूप में अपनाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। परन्तु रामन ने अपनी दिली इच्छा को पूरा किया।

प्रश्न 2 - वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन ने कौन सी भ्रांति तोड़ने की कोशिश की?

उत्तर - लोगों का मानना था कि भारतीय वाद्ययंत्र पश्चिमी वाद्ययंत्र की तुलना में अच्छे नहीं होते हैं। रामन ने अपनी खोजों से इस भ्रांति को तोड़ने की कोशिश की।

प्रश्न 3 - रामन के लिए नौकरी संबंधी कौन सा निर्णय कठिन था?

उत्तर - उस जमाने के हिसाब से रामन सरकारी विभाग में एक प्रतिष्ठित अफसर के पद पर तैनात थे। उन्हें मोटी तनख्वाह और अन्य सुविधाएँ मिलती थीं। उस नौकरी को छोड़कर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर की नौकरी करने का फैसला बहुत कठिन था।

प्रश्न 4 - सर चंद्रशेखर वेंकट रामन को समय समय पर किन किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उत्तर - रामन को 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित किया गया। 1929 में उन्हें 'सर' की उपाधि दी गई। 1930 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें कई अन्य पुरस्कार भी मिले; जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूज पदक, फिलाडेल्फिया इंस्टीच्यूट का फ्रैंकलिन पदक, सोवियत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार, आदि। उन्हें 1954 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 5 - रामन को मिलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय चेतना को जाग्रत किया। ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर - रामन को अधिकतर पुरस्कार तब मिले जब भारत अंग्रेजों के अधीन था। वैसे समय में यहाँ पर वैज्ञानिक चेतना का सख्त अभाव था। रामन को मिलने वाले पुरस्कारों से भारत की न सिर्फ वैज्ञानिक चेतना जाग्रत हुई बल्कि भारत का आत्मविश्वास भी बढ़ा।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में लिखिए -

प्रश्न 1 - रामन के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

उत्तर - हठयोग में योगी अपने शरीर को असह्य पीड़ा से गुजारता है। रामन भी कुछ ऐसा ही कर रहे थे। वे पूरे दिन सरकारी नौकरी में कठिन परिश्रम करते थे और उसके बाद बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में वैज्ञानिक शोध करते थे। उस प्रयोगशाला में बस कामचलाउ उपकरण ही थे। इसलिए रामन के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग कहा गया है।

प्रश्न 2 - रामन की खोज 'रामन प्रभाव' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो गुजरने के बाद उसके वर्ण में परिवर्तन आता है। ऐसा इसलिए होता है कि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण के फोटॉन किसी तरल या ठोस रवे से गुजरते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो टक्कर के बाद या तो वे कुछ ऊर्जा खो देते हैं या कुछ ऊर्जा पा जाते हैं। ऊर्जा में परिवर्तन के कारण प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव आता है। ऊर्जा के परिमाण में परिवर्तन के हिसाब से प्रकाश का रंग किसी खास रंग का हो जाता है। इसे ही रामन प्रभाव कहते हैं।

प्रश्न 3 - 'रामन प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में कौन कौन से कार्य संभव हो सके?

उत्तर - रामन प्रभाव की खोज से अणुओं और परमाणुओं के अध्ययन का कार्य सहज हो गया। यह काम पहले इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा किया जाता था और अब रामन स्पेक्ट्रोस्कोपी द्वारा किया जाने लगा। इस खोज से कई पदार्थों का कृत्रिम संश्लेषण संभव हो पाया।

प्रश्न 4 - देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के महत्वपूर्ण योगदान प्र प्रकाश डालिए।

उत्तर - देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने के लिए रामन के कई काम किए। रामन ने बंगलोर में एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध संस्थान की स्थापना की, जिसे अब रामन रिसर्च इंस्टीच्यूट के नाम से जाना जाता है। भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने इंडियन जरनल ऑफ फिजिक्स नामक शोध पत्रिका प्रारंभ की। उन्होंने अपने जीवन काल में सैंकड़ों शोध छात्रों का मार्गदर्शन किया। विज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए वे करेंट साइंस नामक पत्रिका का संपादन भी करते थे।

प्रश्न 5 - सर चंद्रशेखर वेंकट रामन के जीवन से प्राप्त होनेवाले संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - सर चंद्रशेखर वेंकट रामन ने हमेशा ये संदेश दिया कि हम विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। न्यूटन ने ऐसा ही किया था और तब जाकर दुनिया को गुरुत्वाकर्षण के बारे में पता चला था। रामन ने ऐसा ही किया था और तब जाकर दुनिया को पता चला कि समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है, कोई और क्यों नहीं। जब हम अपने आस पास घटने वाली घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषन करेंगे तो हम प्रकृति के बारे में और बेहतर ढ़ंग से जान पाएँगे।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए -

प्रश्न 1 - उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सुविधाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी।

उत्तर - रामन एक ऐसी नौकरी में थे जहाँ मोटी तनख्वाह और अन्य सुविधाएँ मिलती थीं। लेकिन रामन ने उस नौकरी को छोड़कर ऐसी जगह नौकरी करने का निर्णय लिया जहाँ वे सारी सुविधाएँ नहीं थीं। लेकिन नई नौकरी में रहकर रामन अपने वैज्ञानिक शोध का कार्य बेहतर ढ़ंग से कर सकते थे। यह दिखाता है कि उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख सुविधाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी।

प्रश्न 2 - हमारे पास ऐसी न जाने कितनी ही चीजें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं।

उत्तर - हमारे पास अनेक ऐसी चीजें हैं या घटनाएँ घटती रहती हैं जिन्हें हम जीवन का एक सामान्य हिस्सा मानकर चलते हैं। लेकिन उन्ही चीजों में कोई जिज्ञासु व्यक्ति महत्वपूर्ण वैज्ञानिक रहस्य खोज लेता है। फिर हम जैसे नींद से जागते हैं और उस नई खोज से विस्मित हो जाते हैं। किसी की जिज्ञासा उस सही पात्र की तरह है जिसमें किसी वैज्ञानिक खोज को मूर्त रूप मिलता है।

प्रश्न 3 - यह अपने आप में एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था।

उत्तर - इस पंक्ति में लेखक रामन के अथक परिश्रम के बारे में बता रहा है। रामन उस समय एक सरकारी नौकरी में कार्यरत थे। अपने दफ्तर में पूरे दिन काम करने बाद जब वे शाम में निकलते थे तो घर जाने की बजाय सीधा बहु बाजार स्थित प्रयोगशाला में जाते थे। वे प्रयोगशाला में घंटों अपने शोध पर मेहनत करते थे। पूरे दिन दफ्तर में काम करने के बाद फिर प्रयोगशाला में काम करना बहुत मुश्किल होता है। यह शारीरिक और मानसिक तौर पर थका देता है। इसलिए लेखक ने ऐसे काम को हठयोग की संज्ञा दी है।

प्रश्न 1 - पेड़ से सेब के गिरने के पीछे छिपे रहस्य को सबसे पहले किसने समझा था?

(A) लेखक ने

(B) न्यूटन ने

(C) चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने

(D) इनमें से किसी ने नहीं

प्रश्न 2 - विशालकाय समुद्र के नील रंग की चमक के पीछे छिपे रहस्य को किसने समझा था?

(A) लेखक ने

(B) न्यूटन ने

(C) चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने

(D) इनमें से किसी ने नहीं

प्रश्न 3 - किस सवाल का जवाब ढूँढने के कारण रामन संसार में प्रसिद्ध हो गए?

(A) पेड़ से सेब नीचे ही क्यों गिरता है?

(B) प्रकाश की किरणों में कितने रंग होते हैं?

(C) समुद्र का पानी खरा क्यों होता है?

(D) आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है? कुछ और क्यों नहीं?

प्रश्न 4 - रामन् के पिता रामन् को बचपन से ही पढ़ाते थे?

(A) गणित और विज्ञान

(B) विज्ञान और हिंदी

(C) गणित और फ़िज़िक्स

(D) फिज़िक्स और विज्ञान

प्रश्न 5 - रामन् मस्तिष्क किसको सुलझाने के लिए बचपन से ही बेचैन रहता था?

(A) गणित के सवालों को

(B) विज्ञान के रहस्यों को

(C) पिता द्वारा पूछे प्रश्नों को

(D) इनमें से किसी ने नहीं

प्रश्न 6 - रामन् किस सरकारी नौकरी को कर रहे थे?

(A) वित्तविभाग-

(B) गृह मंत्रालय

(C) शिक्षा विभाग

(D) सुरक्षा विभाग

प्रश्न 7 - 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंसप्रयोगशाला की स्थापना किसने की ' थी?

(A) लेखक ने

(B) न्यूटन ने

(C) चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने

(D) डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार

प्रश्न 8 - 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंससंस्था का उद्देश्य क्या था '?

(A) अनुसन्धान करना

(B) खोजे करना

(C) वैज्ञानिक चेतना का विकास करना

(D) वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करना

प्रश्न 9 - चंद्रशेखर वेंकट रामन् को सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद स्वीकार करने की राय किसने दी?

(A) लेखक ने

(B) डॉक्टर महेंद्रलाल ने

(C) आशुतोष मुखर्जी ने

(D) इनमें से किसी ने नहीं

प्रश्न 10 - चंद्रशेखर वेंकट रामन् को नौकरी करते हुए कितने वर्ष बीत चुके थे?

(A) दस

(B) आठ

(C) बारह

(D) सात

पाठ-6-कीचड़

काका ककेलकर

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.रंग की शोभा ने क्या कर दिया?
उत्तर-लाल रंग की शोभा ने कमाल कर दिया।

प्रश्न 2.बादल किसकी तरह हो गए थे?
उत्तर-बादल सफ़ेद रंग की पूनी (रुई की बत्ती) की तरह हो गए थे।

प्रश्न 3.लोग किन-किन चीज़ों का वर्णन करते हैं?
उत्तर-लोग आकाश, पृथ्वी तथा सरोवरों का वर्णन करते हैं।

प्रश्न 4.कीचड़ से क्या होता है?
उत्तर-लोग कीचड़ को मलिनता का प्रतीक मानते हैं। उनका मानना है कि कीचड़ शरीर को गंदा और कपड़ों को मैला करता है।

प्रश्न 5.कीचड़ जैसा रंग कौन पसंद करते हैं?
उत्तर-कीचड़ जैसे रंग विज्ञ कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार और छायाकार (फोटोग्राफर) पसंद करते हैं।

प्रश्न 6.नदी के किनारे कीचड़ सब सुंदर दिखता है?
उत्तर-नदी के किनारे कीचड़ सूखकर टेढ़े-मेढ़े टुकड़ों में बँटने पर तथा दूर-दूर तक फैला समतल और चिकना कीचड़ सुंदर लगता है।

प्रश्न 7.कीचड़ कहाँ सुंदर लगता है?
उत्तर-नदी के किनारे मीलों तक फैला हुआ समतल और चिकना कीचड़ बहुत सुंदर प्रतीत होता है।

प्रश्न 8.'पंक' और 'पंकज' शब्द में क्या अंतर है?
उत्तर-'पंक' का अर्थ कीचड़ (मलिनता का प्रतीक) तथा 'पंकज' का अर्थ कमल (सौंदर्य का प्रतीक) है। 'पंक' शब्द मन में जहाँ घृणा भाव जगाता है, वहीं पंकज आह्लाद का भाव।

*-(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.कीचड़ के प्रति किसी को सहानुभूति क्यों नहीं होती?
उत्तर-कीचड़ के प्रति किसी को भी सहानुभूति नहीं होती। कारण यह है कि लोग इसे गंदा मानते हैं। वे न तो इसे छूना पसंद करते हैं, न इसके छींटों से अपने कपड़े खराब करना पसंद करते हैं। यदि पंक कपड़ों पर लग जाए तो हमें कपड़े को, मैला मान लेते हैं।

प्रश्न 2.जमीन ठोस होने पर उस पर किनके पदचिह्न अंकित होते हैं?
उत्तर-जब जमीन गीली होती है तो पानी के निकट रहने वाले बगुले तथा अन्य छोटे-बड़े पक्षियों के पदचिह्न अंकित हो जाते हैं। यही ज़मीन जब ठोस हो जाती है तो उस पर गाय, बैल, भैंस, पाड़े, भेड़-बकरियों के पदचिह्न अंकित हो जाते हैं।

प्रश्न 3.मनुष्य को क्या भान होता जिससे वह कीचड़ का तिरस्कार न करता?
उत्तर-मनुष्य को यह भान नहीं है कि उसका पेट भरने वाला सारा अन्न इसी कीचड़ में से उत्पन्न होता है। यदि उसे । इस तथ्य को भान होता तो वह कदापि कीचड़ का तिरस्कार न करता।

प्रश्न 4.पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की क्या विशेषत है?
उत्तर-पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की विशेषता यह है कि वह मीलों दूर तक फैला हुआ और सनातन है। जिधर देखो, उधर कीचड़ ही कीचड़ दिखता है। यह कीचड़ मही नदी के मुँह के आगे की ओर असीमित मात्रा में है।

*-(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.कीचड़ की रंग किन-किन लोगों को खुश करता है?
उत्तर-कीचड़ का रंग श्रेष्ठ कलाकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और छायाकारों (फोटोग्राफरों) को खुश करता है। वे भट्टी में पकाए गए बर्तनों पर यही रंग करना पसंद करते हैं। छायाकार भी जब फोटो खींचते हैं तो एकाध जगह पर कीचड़-जैसा रंग देना पसंद करते हैं। वे इसे वार्मटोन अर्थात् पक्के रंग की झलक या ऊष्मा की झलक कहकर खुश होते हैं। इनके अतिरिक्त आम लोग अपने घरों की दीवारों पर, पुस्तकों के गत्तों पर और कीमती कपड़ों पर यही रंग देखना चाहते हैं।

प्रश्न 2.कीचड़ सूखकर किस प्रकार के दृश्य उपस्थित करता है?
उत्तरसूखने के बाद जब कीचड़ टुकड़ों में बँट जाता है, तब सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है। ज्यादा गरमी के कारण इन टुकड़ों पर बहुत-सी दरारें पड़ जाती हैं। ये सूखकर जब टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं तो ये सुखाए हुए नारियल जैसे लगते हैं। गीले कीचड़ पर पक्षियों के पदचिह्नों के अंकन से दूर-दूर तक बने चिह्न मध्य एशिया के मार्ग जैसे लगते हैं। इसके अलावा दो मदमस्त पाड़ों के लड़ने से भारतीय महिषकुल युद्ध का अंकन हो जाता है।

प्रश्न 3.सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है?

उत्तर-सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य नदी के किनारे पर दिखाई देता है। कीचड़ का पृष्ठ भाग सूखने पर उस पर बगुले और अन्य छोटे-बड़े पक्षी विहार करने लगते हैं। उनका यह विहार बहुत सुंदर प्रतीत होता है। कुछ अधिक सूखने पर उस पर गायें, बैल, भैंसें, पाड़े, भेड़े, बकरियाँ भी चहलकदमी करने लगती हैं। भैंसों के पाड़े तो सींग से सींग भिड़ाकर भयंकर युद्ध करते हैं। तब कीचड़ जगह-जगह से उखड़ जाती है। उस समय का सौंदर्य देखते ही बनता है।

प्रश्न 4.कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशुन्य क्यों कहा है?

उत्तर-लेखक ने कवियों की धारणा को युक्तिशून्य इसलिए कहा है क्योंकि वे बाह्य सौंदर्य को महत्व देते हैं, जबकि वे आंतरिक सुंदरता और इसकी उपयोगिता की उपेक्षा करते हैं। ये लोग कमल, वासुदेव, हीरा और मोती के सौंदर्य पर आह्लादित होते हैं, परंतु इनके उत्पत्ति के स्रोतों क्रमशः कीचड, वसुदेव, कोयला और सीप की उपेक्षा कर कहते हैं कि हमें इनके स्रोतों से सरोकार नहीं। उनकी ऐसी धारणा युक्तिशून्य ही तो है।

*-(ग) निम्नलिखित की आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषकुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो ऐसा भास होता है।

उत्तर-लेखक कहता है-नदी किनारे फैली कीचड़ जब सूखकर ठोस हो जाती है, तो उस पर भैंसों के पाडे आपस में खूब क्रीड़ा युद्ध करते हैं। वे सींग से सींग भिड़ाकर लड़ते हैं तथा अपने पैरों और सींगों से कीचड़ को खोद डालते हैं। उसे खुदी हुई कीचड़ को देखकर ऐसे लगता है मानो यहाँ भैंसों के कुल का कोई महाभारत लड़ा गया हो।

प्रश्न 2."आप वासुदेव की पूजा करते हैं इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं किंतु कोयले या पत्थर की नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते!" कम-से कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम!

उत्तर-आशय -कविगण सौंदर्य और उपयोगिता के आधार पर वस्तुओं को ही महत्व देते हैं। वे यह बाह्य सौंदर्य ही देखते हैं, आंतरिक नहीं। ये वस्तुएँ कहाँ से पैदा हुई है, उनके स्रोत से उनका कोई मतलब नहीं। वे कहते हैं कि पंकज, वासुदेव, हीरा और मोती की प्रशंसा तो ठीक है पर इनके उत्पत्ति स्रोत कीचड़, वसुदेव, कोयला और सीप की प्रशंसा क्यों करें। लेखक का मानना है कि बाह्य सौंदर्य के द्रष्टा इन कवियों से इस बात को करना ही बेकार ह

पाठ-13-गीत अगीत

रम२अरि दिनकर

प्रस्तुत कविता 'गीत-अगीत' में कवि ने प्रकृति की सुंदरता के साथ-साथ जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम, मानवीय राग और प्रेमभाव का भी सजीव चित्रण किया है। कविता के प्रथम भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कवि ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहता है कि नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है।

ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। कविता के दूसरे भाग में कवि तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। कवि कहता है कि जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। कविता के तीसरे भाग में कवि दो प्रेमियों का वर्णन करता हुआ कहता है कि दोनों प्रेमियों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है
तो उसकी प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

पाठ व्याख्या

(1)
गाकर गीत विरह के तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता

“देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।“
गा गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -
तटिनी - नदी, तटों के बीच बहती हुई
वेगवती - तेज़ गति से
उपलों - किनारों से
विधाता - ईश्वर
निर्झरी - झरना, नदी
पाटल - गुलाब

व्याख्या - कविता के इस भाग में नदी के बहने से जो सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कवि ने उसका बहुत सुन्दर वर्णन किया है। कवि कहता है कि नदी को बहता हुआ देखते हुए ऐसा लगता है जैसे नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कवि कहता है कि किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब किनारे पर चुपचाप खड़ा है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

(2)
बैठा शुक उस घनी डाल पर
जो खोंते को छाया देती।
पंख फुला नीचे खोंते में
शुकी बैठ अंडे है सेती।
गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
किंतु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते सनेह में सनकर।

गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
फूला मग्न शुकी का पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -
शुक - तोता
खोंते - घोंसला
पर्ण - पत्ता, पंख
शुकी - मादा तोता

व्याख्या - कविता के इस भाग में कवि तोता और मादा-तोता के प्रेम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि एक तोता पेड़ की उस घनी डाली पर बैठा हुआ है जो डाल उसके घोंसलें को छाया देती है। उसी घोंसलें में उस तोते की मादा अपने पंखों को फैला कर अपने अंडे से रही है। कवि कहता है कि जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं
और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता।
उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है। अर्थात वह बहुत खुश है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

(3)
दो प्रेमी हैं यहाँ, एक जब
बड़े साँझ आल्हा गाता है,
पहला स्वर उसकी राधा को
घर से यहीं खींच लाता है।
चोरी-चोरी छिपकर सुनती है,
'हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना', यों मन में गुनती है।
वह गाता, पर किसी वेग से
फूल रहा इसका अंतर है।
गीत, अगीत कौन सुंदर है?

शब्दार्थ -

आल्हा - एक लोक-गीत का नाम

कड़ी - वे छंद जो गीत को जोड़ते हैं

बिधना - भाग्य, विधाता

गुनती - विचार करती है

वेग - गति

व्याख्या - कविता के इस भाग में कवि दो प्रेमियों का वर्णन करता हुआ कहता है कि वन में दो प्रेमी रहते हैं। दोनों प्रेमियों में से जब एक प्रेमी शाम के समय कोई लोक गीत गाता है तो उसकी प्रेमिका उस गाने को सुनने के लिए अपने घर से वन की ओर खिंची चली आती है। वह चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती। जब प्रेमी गाता है तो प्रेमिका का मन प्रसन्नता से फूले नहीं समाता है। कवि यह सब देखकर सोच रहा है कि मेरे द्वारा गया गया गीत सुन्दर है या प्रकृति के द्वारा न गा सकने वाला अगीत सुन्दर है?

गीत अगीत प्रश्न अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 - नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।

उत्तर - जब नदी अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बह रही है तो किनारे पर एक गुलाब सोचने लगता है कि यदि भगवान उसे बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी अपने सपनों के गीत सबको सुनाता। इससे संबंधित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं –

“देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।“

प्रश्न 2 - जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर - जब सूर्य की किरणें पत्तों से छनकर आती हैं और तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाना गाने लगता है। उसका गाना सुनकर उसकी मादा भी गाना चाहती है लेकिन उसका गीत केवल तोते के

प्यार में लिपट कर रह जाता है और उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता। उधर तोते का गीत पूरे वन में गूँज रहा है और इधर उसकी मादा उसका गीत सुनकर फूले नहीं समा रही है।

प्रश्न 3 - प्रेमी जब गीत गाता है, तो प्रेमी की क्या इच्छा होती है?

उत्तर - जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रेमिका चोरी से छुप-छुप कर अपने प्रेमी का गाना सुनती है और मन में सोचती है कि वह उस गीत का हिस्सा क्यों नहीं बनती।

प्रश्न 4 - प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति चित्रण को लिखिए।

उत्तर - कविता के प्रथम छंद में नदी के बहने से जो दृश्य उत्पन्न होता है उसका कवि ने मनोहारी वर्णन किया है। नदी विरह के गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसा लगता है जैसे नदी किसी के बिछड़ने के दुःख में दुखी होते हुए गीत गाते हुए बड़ी तेजी से बह रही है। ऐसे में लगता है कि वह अपना दुःख कम करने के लिए किनारों से कुछ कहती हुई बहती जा रही है। कवि कहता है कि किनारे के पास में ही एक गुलाब चुपचाप यह सब देख रहा है और अपने मन में सोच रहा है कि यदि भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी पूरी दुनिया को अपने सपनों के गीत सुनाता। झरना भी बह-बह कर गीत गा रहा है और गुलाब किनारे पर चुपचाप खड़ा है।

प्रश्न 5 - प्रकृति के साथ पशु पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रकृति के साथ पशु पक्षियों का गहरा संबंध है। पशु पक्षी प्रकृति के बिना जीवित नहीं रह सकते। प्रकृति ही उन्हें आवास प्रदान करती है और भोजन प्रदान करती है।

प्रश्न 6 - मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - मनुष्य को प्रकृति भिन्न रूपों में आंदोलित करती है। जब मनुष्य किसी कल कल बहती नदी को देखता है तो उसके संगीत में खो जाता है। जब मनुष्य हल्की बारिश देखता है तो उसमें सराबोर होना चाहता है। लेकिन जब तेज तूफान आता है तो मनुष्य उससे बचकर किसी सुरक्षित ठिकाने पर चला जाता है।

प्रश्न 7 - सभी कुछ गीत है, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जब हमारी भावना हमारे होठों पर लयबद्ध तरीके से बाहर आती है तो उसे गीत कहते हैं। जब कोई भावना अंदर ही रहती है तो उसे अगीत कहते हैं। कभी कभी अगीत भी गीत बनकर स्फुटित हो

उठता है। और प्रकृति के द्वारा किए गए शब्दों से कवि भी हैरान है और समझ नहीं पा रहा है कि कवि की भावनाऐं जो गीत बन कर बाहर आई है वह सुन्दर है या प्रकृति के बिना शब्दों वाला संगीत सुन्दर है।

प्रश्न 8 - 'गीत अगीत' के केंद्रीय भाव को लिखिए।

उत्तर - इस कविता में कवि ने प्रत्यक्ष भावना और छुपी हुई भावना की तुलना की है। यह तुलना प्रकृति में छुपे अनेक सौंदर्य के सहारे से की गई है। नदी के गाने की तुलना गुलाब के मौन रहने से की गई है। शुक के गाने की तुलना शुकी के मौन से की गई है। प्रेमी के गाने की तुलना प्रेमिका के मौन से की गई है। इस तरह से इस कविता में कवि ने गीत और अगीत के माध्यम से प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया गया है।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

प्रश्न 1 - अपने पतझर के सपनों का मैं जग को गीत सुनाता

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें नदी की सुंदरता का वर्णन है। जब नदी गीत गाते हुए और किनारों से बातें करते हुए आगे बढ़ती है तो गुलाब चुपचाप यह सोचता है कि अगर भगवान ने उसे भी बोलने की शक्ति दी होती तो वह भी दुनिया को अपने सपनों के बारे में गा गाकर सुनाता।

प्रश्न 2 - गाता शुक जब किरण वसंती छूती अंग पर्ण से छनकर

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें शुक और शुकी के प्रेम का वर्णन है। जब पत्तियों से छनकर आने वाली किरणें तोते के पंखों का स्पर्श करती हैं तो तोता गाने लगता है।

प्रश्न 3 - हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर - ये पंक्ति कविता के उस भाग से ली गई है जिसमें प्रेमी और प्रेमिका का वर्णन है। जब प्रेमी गीत गाता है तो प्रेमिका सोचती है कि कितना अच्छा होता यदि वह उस गीत का एक हिस्सा बन जाती।

पाठ-7 'धर्म की आड़'
(गणेश शंकर विद्ध्यार्थी)

*-धर्म की आड़-सार:-

लेखक कहता है कि आज देश में ऐसा समय आ गया है कि हर तरफ केवल धर्म की ही धूम है। अनपढ़ और मन्दबुद्धि लोग धर्म और सच्चाई को जानें, या न जानें, परंतु उनके नाम पर किसी पर भी गुस्सा कर जाते हैं और जान लेने और जान देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। गलती उन कुछ चलते-पुरज़ों अर्थात पढ़े-लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का गलत उपयोग इसलिए कर रहे हैं ताकि उन मूर्खों के बल के आधार पर पढ़े-लिखे लोगों का नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और सच्चाई की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे आसान लगता है। हमारे देश के साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और सच्चाई की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना बिलकुल सही है। पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों की, गरीब मज़दूरों की झोंपड़ी का मज़ाक उड़ाते ऊँचे-ऊँचे मकान आकाश से बातें करते हैं! गरीबों की कमाई ही से वे अमीर से अमीर होते जा रहे हैं, और उन ग़रीब मजदूरों के बल से ही वे हमेशा इस बात का प्रयास करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। ताकि वे हमेशा अमीर बने रहें। गरीबों का धनवान लोगों के द्वारा शोषण किया जाना इतना बुरा नहीं है, जितना बुरा धनवान लोगो का मजदूरों की बुद्धि पर वार करना है। धर्म और सच्चाई के नाम पर किए जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए, साहस और दृढ़ता के साथ, उद्योग होना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक भारतवर्ष में हमेशा बढ़ते जाने वाले झगड़े कम नहीं होंगे। चाहे धर्म की कोई भी भावना हो, किसी दशा में भी वह किसी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता को छीनने या नष्ट करने का साधन नहीं बननी चाहिए। आपका मन चाहे जिस तरह चाहे उस तरह का धर्म मानें, और दूसरों का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। लेखक कहता है कि दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए इस देश में कोई भी स्थान न हो। देश की स्वतंत्रता के लिए जो उद्योग किया जा रहा था उसका वह दिन बिना किसी शक के कहा जा सकता है कि बहुत बुरा था, जिस दिन, स्वतंत्रता के क्षेत्र में पैगंबर या बादशाह का प्रतिनिधि, मुल्ला, मौलवियों और धर्माचारियों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया। लेखक कहता है कि एक प्रकार से उस दिन हमने स्वतंत्रता के क्षेत्र में, एक कदम पीछे हटकर रखा था। अपने उसी पाप का फल आज हमें भोगना पड़ रहा है। क्योंकि आज धर्म और ईमान का ही बोल-बाला है। लेखक कहता है कि

महात्मा गांधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक कदम भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परंतु गाँधी जी की बात पर अम्ल करने के पहले, प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्माजी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है? गांधी कहते हैं कि अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दाबने और नमाज़ पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्ध आचरण और अच्छा व्यवहार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घंटे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंच-वक्ता नमाज़ भी अदा कीजिए, परन्तु ईश्वर को इस प्रकार रिश्वत के दे चुकने के पश्चात्, यदि आप अपने को दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए आज़ाद समझते हैं तो, इस धर्म को, आगे आने वाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आपका आचरण दूसरों के लिए सही नहीं है तो आप चाहे कितनी भी पूजा अर्चना नमाज़ आदि पढ़ लें कोई फ़ायदा नहीं होगा। ईश्वर इन नास्तिकों जिनका कोई धर्म नहीं होता ऐसे लोगों को अधिक प्यार करेगा, और वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करने वालों से यही कहना पसंद करेगा। ईश्वर है और हमेशा रहेगा। लेखक सभी से प्रार्थना करता है कि सभी मनुष्य हैं, मनुष्य ही बने रहें पशु न बने।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 1आज देश में हर तरफ किसकी धूम है।

)A) सच्चाई

)B) खुरापात

)C) धर्म

)D) ईमान

प्रश्न - 2साधारण आदमी किसके लिए प्राण तक दे देना सही समझता है?

)A) धर्म की रक्षा के लिए

)B) सच्चाई की रक्षा के लिए

)C) धर्म और सच्चाई की रक्षा के लिए

)D) ईमान की रक्षा के लिए

प्रश्न - 3साधारण लोगों की किस बात का चालाक लोग बहुत गलत फ़ायदा उठा रहे हैं?

)A) धर्म की रक्षा

)B) सच्चाई की रक्षा

)C) धर्म और सच्चाई की रक्षा

)D) ईमान की रक्षाप्रश्न

- 4पाश्चात्य देशों में, धनी लोगों की क्या चीज़ गरीब मज़दूरों की झोंपड़ी का मज़ाक उड़ाती हैं?

)A) सच्चाई

)B) ईमान

)C) धन

)D) ऊँचे ऊँचे-मकान

प्रश्न - 5आज देश में लोगों को किस तरह वश में किया जाता है?

)A) सच्चाई से

)B) धन से

)C) धर्म से

)D) ईमान से

प्रश्न - 6आज देश में बढ़ने वाले झगड़ों का क्या कारण है?

)A) सच्चाई

)B) खुरापात

)C) धर्म

)D) ईमान

प्रश्न - 7लेखक के अनुसार किसके लिए इस देश में कोई भी स्थान नहीं होना चाहिए?

)A) सच्चाई के लिए

)B) खुरापात के लिए

)C) धर्म के लिए

)D) दो भिन्न धर्मों के मानने वालों के टकरा जाने के लिए

प्रश्न - 8लेखक के अनुसार स्वतंत्रता के क्षेत्र में क्या गलती हुई?

)A) सच्चाई को स्थान देना

)B) धर्माचारियों को स्थान देना

)C) धर्म को स्थान देना

)D) ईमान को स्थान देना

प्रश्न - 9महात्मा गांधी किसको सर्वत्र स्थान देते हैं?

)A) सच्चाई

)B) खुरापात

)C) धर्म

)D) ईमान

प्रश्न - 10सबसे सर्वश्रेष्ठ किसे कहा गया है?

)A) सच्चाई को

)B) खुरापात को

)C) धर्म को

)D) अच्छे आचरण को

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1-आज धर्म के नाम पर क्या-क्या हो रहा है?

1-आज धर्म के नाम पर उत्पात किए जाते हैं, जिद् की जाती है और आपसी झगड़े करवाए जाते हैं।

2-धर्म के व्यापार को रोकने के लिए क्या उद्योग होने चाहिए?

2-धर्म के व्यापार को रोकने के लिए हमें कुछ स्वार्थी लोगों के बहकावे में नहीं आना चाहिए। हमें अपने विवेक से काम लेते हुए धार्मिक उन्माद का विरोध करना चाहिए।3-लेखक के अनुसार, स्वाधीनता आंदोलन का कौन-सा दिन सबसे बुरा था?

3-आज़ादी के आंदोलन के दौरान सबसे बुरा दिन वह था जब स्वाधीनता के लिए खिलाफ़त, मुँल्ला मौलवियों और धर्माचार्यों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया गया।

4-साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में क्या बात अच्छी तरह घर कर बैठी है?
4-अति साधारण आदमी तक के दिल में यह बात घर कर बैठी है कि धर्म और ईमान की रक्षा में जान देना उचित है।
5-धर्म के स्पष्ट चिह्न क्या हैं?
5-धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं-शुद्ध आचरण और सदाचार।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1-(चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं?

1-चलते-पुरज़े लोग अपनी स्वार्थ की पूर्ति एवं अपनी महत्ता बनाए रखने के लिए भोले-भाले लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुपयोग करते हैं। वे धार्मिक उन्माद फैलाकर अपना काम निकालते हैं।

2-चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं?

2-आदमी साधारण आदमी की धर्म के प्रति अटूट आस्था का लाभ उठाते हैं। वे अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ऐस आस्थावान धार्मिक लोगों को मरने-मारने के लिए छोड़ देते हैं।

3-आनेवाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा?

3-कुछ लोग यह सोचते हैं कि दो घंटे का पूजा-पाठ और पाँचों वक्त की नमाज पढ़कर हर तरह का अनैतिक काम करने के लिए स्वतंत्र हैं तो आने वाला समय ऐसे धर्म को टिकने नहीं देगा।

4-कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा?

4-देश की आजादी के लिए किए जा रहे प्रयासों में मुल्ला, मौलवी और धर्माचार्यों की सहभागिता को देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा। लेखक के अनुसार, धार्मिक व्यवहार से स्वतंत्रता की भावना पर चोट पहुँचती है।

5-पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है?

5-पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धनों के बीच घोर विषमता है। वहाँ धन का लालच दिखाकर गरीबों का शोषण किया जाता। है। गरीबों की कमाई के शोषण से अमीर और अमीर, तथा गरीब अधिक गरीब होते जा रहे हैं।

6-कौन-से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं?

6-नास्तिक लोग, जो किसी धर्म को नहीं मानते, वे धार्मिक लोगों से अच्छे हैं। उनका आचरण अच्छा है।वे सदा सुख-दुख में एक दूसरे का साथ देते हैं। दूसरी ओर धार्मिक लोग एक दूसरे को धर्म के नाम पर लड़वाते हैं।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1-धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता है?

1-धर्म और ईमान के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को रोकने के लिए दृढ़-निश्चय के साथ साहसपूर्ण कदम उठाना होगा। हमें साधारण और सीधे-साधे लोगों को उनकी असलियत बताना होगा जो धर्म के नाम पर दंगे-फसाद करवाते हैं। लोगों को धर्म के नाम पर उबल पड़ने के बजाए बुद्धि से काम लेने के लिए प्रेरित करना होगा। इसके अलावा धार्मिक ढोंग एवं आडंबरों से भी लोगों को बचाना होगा।

2-'बुधि पर मार' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

2-बुद्धि की मार से लेखक का अर्थ है कि लोगों की बुद्धि में ऐसे विचार भरना कि वे उनके अनुसार काम करें। धर्म के नाम पर, ईमान के नाम पर लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काया जाता है। लोगों की

बुद्धि परपरदा डाल दिया जाता है। उनके मन में दूसरे धर्म के विरुद्ध जहर भरा जाता है। इसका उद्देश्य खुद का प्रभुत्व बढ़ाना होता है।

3-लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए?

3-लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना ऐसी होनी चाहिए, जिसमें दूसरों का कल्याण निहित हो। यह भावना पवित्र आचरण और मनुष्यता से भरपूर होनी चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने,पूजा-पाठ की विधि अपनाने की छूट होनी चाहिए। इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। धार्मिक भावनापशुता को समाप्त करने के साथ मनुष्यता बढ़ाने वाली होनी चाहिए।

4-महात्मा गांधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

4-महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को महत्त्वपूर्ण स्थान देते थे। वे एक कदम भी धर्म विरुद्ध नहीं चलतेथे। परंतु उनके लिए धर्म का अर्थ था-ऊँचे विचार तथा मन की उदारता। वे 'कर्तव्य' पक्ष पर जोर देते थे। वे धर्म के नाम पर हिंदू-मुसलमान की कट्टरता के फेर में नहीं पड़ते थे। एक प्रकार से कर्तव्य ही उनके लिए धर्म था।

5-सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है?

5-सबके कल्याण हेतु अपने आचरण को सुधारनी इसलिए ज़रूरी है कि पूजा-पाठ करके, नमाज़ पढ़कर हम दूसरों का अहित करने, बेईमानी करने के लिए आज़ाद नहीं हो सकते। आने वाला समय ऐसे धर्म को बिल्कुल भी नहीं टिकने देगा। ऐसे में आवश्यक है कि हम अपना स्वार्थपूर्ण आचरण त्यागकर दूसरों का कल्याण करने वाला पवित्र एवं शुद्धाचरण अपनाएँ। आचरण में शुद्धता के बिना धर्म के नाम पर हम कुछ भी करें,सब व्यर्थ है।

*- निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

1-उबल पड़ने वाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं, उधर जुत जाता है।

1-उक्त कथन का आशय है कि साधारण आदमी में सोचने-विचारने की अधिक शक्ति नहीं होती। वह अपने धर्म, संप्रदाय के प्रति अंधी श्रद्धा रखता है। उसे धर्म के नाम पर जिस काम के लिए कहा जाता है, वह उसी काम को करने लगता है। उसमें अच्छा-बुरा सोचने-विचारने की शक्ति नहीं होती।

2-यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थ-सिधि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना।

2-यहाँ अर्थात् भारत में कुछ लोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लोगों का बौधिक-शोषण करते हैं। वे धर्म के नाम पर तरह तरह की विरोधाभासी बातें साधारण लोगों के दिमाग में भर देते हैं और धर्म के नाम पर उन्हें गुमराह कर उनका मसीहा स्वयं बन जाते हैं। इन धर्माध लोगों को धर्म के नाम पर आसानी से लड़ाया-भिड़ाया जा सकता है। कुछ चालाक लोग इनकी धार्मिक भावनाएँ भड़काकर अपनी स्वार्थपूर्ति करते हैं।

3-अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जाएगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगी।

3-इस उक्ति का अर्थ है कि आनेवाले समय में किसी मनुष्य के पूजा-पाठ के आधार पर उसे सम्मान नहीं मिलेगा। सत्य आचरण और सदाचार से भले आदमी की पहचान की जाएगी।

4-तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो!

4-स्वयं को धार्मिक और धर्म का तथाकथित ठेकेदार समझने वाले साधारण लोगों को लड़ाकर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। ऐसे लोग पूजा-पाठ, नमाज़ आदि के माध्यम से स्वयं को सबसे बड़े आस्तिक समझते हैं। ईश्वर ऐसे लोगों से कहता है। कि तुम मुझे मानो या न मानो पर अपने आचरण को सुधारो, लोगों को लड़ाना-भिड़ाना बंद करके उनके भले की सोचो। अपनी इंसानियत को जगाओ। अपनी स्वार्थ-पूर्ति की पशु-प्रवृत्ति को त्यागो और अच्छे आदमी बनकर अच्छे काम करो।

भाषा-अध्ययन

1-शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए-

1-धर्म – अधर्म
2-ईमान – बेईमान
3-साधारण – असाधारण
4-स्वार्थ – परमार्थ
5-दुरुपयोग – सदुपयोग
6-नियंत्रित – अनियंत्रित
7-स्वाधीनता – पराधीनता

2-निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए-

ला, बिला, बे, बद, ना, खुश, हर, गै

1-ला – लापता, लावारिस
2-ना – नासमझ, नालायक
3-बिला – बिलावज़ह, बिलानागा
4-खुश – खुशकिस्मत, खुशबू
5-बद – बदनसीब, बदतमीज़
6-हर – हरवक्त, हर दिन
7-बे – बेवफा, बेरहम
8-गैर – गैरहाजिर, गैरकानूनी

संचयन –पाठ-5-हामिद खां

हामिद खां-सार:-

प्रश्न–एस. के. पोट्टेकाट द्वारा रचित 'हामिद खाँ' नामक पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर–'हामिद खाँ' कहानी हिंदू मुसलिम एकता का पाठ पढ़ाती है। कहानी का सार इस प्रकार है–

लेखक तक्षशिला में–दो साल पहले लेखक पाकिस्तान में तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। वह रेलवे स्टेशन के पास स्थित एक गाँव में निकल पड़ा। वहाँ की गलियाँ तंग, घनी तथा बेतरतीब थीं। जगह जगह धुएँ, मच्छर और गंदगी का साम्राज्य था। चमड़े की बदबू आ रही थी। लंबे कद के पठान अलमस्त चाल से घूम रहे थे। लेखक किसी होटल की तलाश में था।

हामिद के होटल में–लेखक को तलाशते-तलाशते एक होटल मिला। एक अधेड़ पठान अँगीठी के पास सिर झुकाए चपातियाँ बना रहा था। वह लेखक को तीखी नजरों से देखने लगा। लेखक के मुसकराने पर भी वह नहीं मुसकराया। लेखक ने पूछा–खाने को कुछ मिलेगा?

पठान ने बेंच पर बैठने का इशारा करके कहा–'चपाती और सालन है।' थोड़ी देर बाद पठान ने लेखक का परिचय पूछा। उसे हिंदू जानकर उसने पूछा–वह हिंदू होकर एक मुसलमान के होटल में खाना कैसे खाएगा। लेखक ने बताया कि वह हिंदुस्तान में मद्रास के आगे मालाबार नामक स्थान पर रहता है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलमान का कोई भेद नहीं है। वे बढ़िया चाय और पुलाव खाने के लिए हमेशा मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। मुसलमानों की भारत में बनी पहली मसजिद भी उन्हीं के एक राज्य में है। उनके यहाँ हिंदू-मुसलिम दंगे भी न के बराबर होते हैं।

हामिद का दुख–हामिद लेखक की बातों पर विश्वास न कर सका। बोला–काश! मैं आपके मुल्क में जाकर अपनी आँखों से यह सब देख सकता। हामिद ने दुखपूर्वक कहा–पाकिस्तान के हिंदू ऐसी बातें फख्र के साथ किसी मुसलमान से नहीं कह सकते। वे मुसलमानों को अत्याचारियों की संतान मानते हैं। इसलिए पाकिस्तान में रहकर उन्हें अपने सम्मान को बचाना कठिन हो जाता है।

प्रेमपूर्ण भोजन–हामिद ने अपने नौकर अब्दुल को ज़ोर की आवाज लगाई। उसने पश्तो भाषा में लेखक के लिए खाना बनाने का आदेश दिया। हामिद बोला–"आप मुहब्बत और ईमानदारी से मेरे होटल में खाना खाने आए हैं। इस बात का मेरे दिल पर गहरा असर है। अगर सभी हिंदू और मुसलमान आपस में मुहब्बत करते तो कितना अच्छा होता!"

भोजन आया। थाली में चावल, चपातियाँ और सालन लगे थे। लेखक ने बड़े चाव से खाना खाया। उसके बाद उसने पैसे निकाले किंतु हामिद ने लेखक का हाथ रोक लिया। बोला–आप मेरे मेहमान हैं। आपसे पैसे नहीं लूँगा। लेखक ने कहा–एक दुकानदार के नाते आपको पैसे लेने पड़ेंगे। यह कहकर उसने एक रुपये का नोट हामिद की ओर बढ़ा दिया।

हामिद का पैसे लौटाना–हामिद ने लेखक का मन रखने के लिए उससे एक रुपये का नोट ले लिया। परंतु उस नोट को फिर से लेखक की हथेली पर रखकर कहा–*"मैं चाहता हूँ कि यह आप ही के हाथों में रहे। आप जब पहुँचें तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इस पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।"*

लेखक भावविभोर हो गया। उसके बाद वह तक्षशिला के खंडहर देखने चला गया। आज भी हामिद के प्रेम की याद उसके दिल में ताजा है। आज जब उसने यह समाचार सुना कि तक्षशिला में भीषण सांप्रदायिक दंगा हुआ है, तो उसने मन-ही-मन प्रभु से प्रार्थना की कि भगवान दंगे की चिंगारियों से उसके हामिद भाई को सुरक्षित रखे।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - लेखक को हामिद खाँ की याद क्यों आई?

(क) पाकिस्तान में आग लगने की खबर सुन कर

(ख) तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर

(ग) हामिद की दूकान में आग लगने की खबर सुन कर

(घ) शरारती तत्वों द्वारा लेखक के पड़ोस में आग लगा देने के कारण

प्रश्न 2 - लेखक को तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर किसकी याद आई?
(क) हामिद खाँ की
(ख) तक्षशिला के खण्डरों की
(ग) हामिद की दूकान की
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - लेखक तक्षशिला में आग लगने की खबर सुन कर क्या प्रार्थना करने लगा?
(क (पाकिस्तान में लगी आग जल्दी बुझ जाए
(ख (तक्षशिला में लगी आग जल्दी बुझ जाए
(ग (हामिद की दूकान और हामिद सही सलामत हो
(घ (शरारती तत्वों को जल्दी से पकड़ लिया जाए
प्रश्न 4 - जब लेखक तक्षशिला के खण्डरों को देखने गया था तो लेखक किस वजह से परेशान हो गया था?
(क (भूख के कारण
(ख (कड़कड़ाती धूप के कारण
(ग (होटल न मिलने के कारण
(घ (उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - रेलवे स्टेशन से कुछ दूर लेखक जिस गाँव में गया वहाँ लेखक को क्या नजर आ रहा था?
(क) धुआँ और हाथ की रेखाओं की तरह फैली गलियों
(ख) गन्दगी और सड़े हुए चमड़े की बदबू
(ग) मच्छर
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6 - लेखक के पाँव अपने आप उस दुकान की ओर क्यों मुड़ गए?
(क (भूख के कारण
(ख (चपातियों की सोंधी महक के कारण
(ग (कड़कड़ाती धूप से बचने के लिए
(घ (इनमें से कोई नहीं
प्रश्न 7 - जब लेखक हामिद खाँ की दूकान के अंदर गया तो क्या हुआ?
(क) हामिद खाँ ने चपातियाँ बेलना छोड़ दिया

(ख) हामिद खाँ लेखक को घूर-घूर कर देखने लगा
(ग) हामिद खाँ को घूरता हुआ देख कर लेखक मुसकरा दिया
(घ) उपरोक्त सभी
प्रश्न 8 - लेखक के पूछने पर की खाने को कुछ मिलेगा तो हामिद खाँ ने क्या कहा?
(क) केवल चपाती है
(ख) केवल सब्जी या गोश्त का मसालेदार शोरबा है
(ग) चपाती और गोश्त या सब्जी का मसालेदार शोरबा है
(घ) लेखक दूसरे देश से आया है इसलिए उसके पास कुछ नहीं है
प्रश्न 9 - लेखक ने उस दुकान के भीतर झाँककर क्या देखा?
(क) दूकान का आँगन बिना किसी तरीके से लीपा हुआ था
(ख) दूकान की दीवारें धूल से सनी हुई थी
(ग) दूकान के एक कोने में एक खाट पड़ी हुई थी जिस पर एक दाढ़ी वाला बुड्ढा गंदे तकिए पर कोहनी टेके हुए हुक्का पी रहा था
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - लेखक ने हामिद खाँ को क्या बताया कि वह कहाँ का है?
(क) पकिस्तान का
(ख) भारत का
(ग) भारत के दक्षिणी छोर-मद्रास का
(घ) मालाबार का
प्रश्न 11 - लेखक किस धर्म का था?
(क) हिन्दू
(ख) मुस्लिम
(ग) सिक्ख
(घ) ईसाई
प्रश्न 12 - लेखक के हिन्दू होने का पता चलने पर हामिद खाँ ने लेखक से क्या पूछा?
(क (कि वह पाकिस्तान क्यों आया है
(ख (कि क्या वह हिन्दू हो के एक मुस्लिम होटल में खाना खायेगा
(ग (कि वह हिन्दू हो कर मुस्लिम होटल में क्यों आया है
(घ (कि वह हिन्दू और मुस्लिम के बारे में क्या सोचता है
प्रश्न 13 - लेखक के शहर के मुसलमानी होटल में क्या-क्या बढ़िया मिलता है?
(क (चाय
(ख (पुलाव

(ग (बिरयानी

(घ) (क (और) ख (दोनों

प्रश्न 14 - हामिद खाँ लेखक की किस बात पर विश्वास नहीं हर पाया?

(क) हिन्दू होने की बात पर

(ख) भारतीय होने की बात पर

(ग) बिना किसी की परवाह किए मुस्लीम होटल में चले जाने की बात पर

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 15 - लेखक ने हामिद खाँ को कौन सी बात गर्व के साथ बताई?

(क (बिना किसी की परवाह किए मुस्लीम होटल में चले जाते हैं

(ख (लेखक के शहर में हिंदू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं है

*-प्रश्न–उत्तर -

प्र-१ लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

उ-१-हामिद पाकिस्तानी मुसलमान था। वह तक्षशिला के पास एक गाँव में होटल चलाता था। लेखक तक्षशिला

के खंडहर देखने के लिए पाकिस्तान आया तो हामिद के होटल पर खाना खाने पहुँचा। वहीं उनका आपस में परिचय हुआ।

प्र-२-काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता।-'हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

उ-२-हामिद ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वहाँ हिंदू-मुसलमानों को आततताइयों की औलाद समझते हैं।वहाँ सांप्रदायिक सौहार्द्र की कमी के कारण आए दिन हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे होते रहे हैं। इसके विपरीत भारत में हिंदू मुसलमान सौहार्द से मिल-जुलकर रहते हैं। ऐसी बातें हामिद के लिए सपने जैसी थी।

प्र-३-हामिद को लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?

उ-३-हामिद को लेखक की भेदभाव रहित बातों पर विश्वास नहीं हुआ। लेखक ने हामिद को बताया कि उनके प्रदेश में हिंदू-मुसलमान बड़े प्रेम से रहते हैं। वहाँ के हिंदू बढ़िया चाय या पुलावों का स्वाद लेने के लिए मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पाकिस्तान में ऐसा होना संभव नहीं था। वहाँ के हिंदू मुसलमानों को अत्याचारी मानकर उनसे घृणा करते थे। इसलिए हामिद को लेखक की बातों पर विश्वास न हो सका।

प्र-4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

उ-4-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इसलिए इंकार कर दिया, क्योंकि-

वह भारत से पाकिस्तान गए लेखक को अपना मेहमान मान रहा था।

हिंदू होकर भी लेखक मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने गया था।

लेखक मुसलमानों को आततताइयों की औलाद नहीं मानता था।

लेखक की सौहार्द भरी बातों से हामिद खाँ बहुत प्रभावित था।

लेखक की मेहमाननवाजी करके हामिद 'अतिथि देवो भव' की परंपरा का निर्वाह करना चाहता था।

प्र-5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के परस्पर संबंधों को अपने शब्दों में लिखिए।

उ-5-मालाबार में हिंदू-मुसलमानों के आपसी संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। हिंदूजन मुसलमानों के होटलों में खूब खान-पान करते हैं। वे आपस में मिल जुलकर रहते हैं। भारत में मुसलमानों द्वारा बनाई गई पहली मसजिद उन्हीं के राज्य में है। फिर भी वहाँ सांप्रदायिक दंगे बहुत कम होते हैं।

प्र-6-तक्षशिला में आगजनी की खबर पढ़कर लेखक के मन में कौन-सा विचार कौंधा? इससे लेखक के स्वभाव की किस विशेषता का परिचय मिलता है?

उ-6-तक्षशिला में आगजनी की खबर सुनकर लेखक के मन में हामिद खाँ और उसकी दुकान के आगजनी से प्रभावित होने का विचार कौंधा। वह सोच रहा था कि कहीं हामिद की दुकान इस आगजनी का शिकार न हो गई हो। वह हामिद की सलामती की प्रार्थना करने लगा। इससे लेखक के कृतज्ञ होने, हिंदू-मुसलमानों को समान समझने की मानवीय भावना रखने वाले स्वभाव का पता चलता है।

*-प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

1-लेखक का परिचय हामिद खाँ से किन परिस्थितियों में हुआ?

1-एक बार गर्मियों में लेखक तक्षशिला के खंडहर देखने गया था। गर्मी के कारण लेखक का भूख प्यास से बुरा हाल था। खाने की तलाश में वह रेलवे स्टेशन से आगे बसे गाँव की ओर चला गया। वहाँ तंग और गंदी गलियों से भरा बाज़ार था, वहाँ पर खाने पीने का कोई होटल या दुकान नहीं दिखाई दे रही थी और लेखक भूख प्यास से परेशान था। तभी एक दुकान पर रोटियाँ सेंकी जा रही थीं जिसकी खुशबू से लेखक की भूख और बढ़ गई। वह दुकान में चला गया और खाने के लिए माँगा। वहीं हामिद खाँ से परिचय हुआ। हामिद खाँ से बातचीत के समय एक दूसरे की भावना का पता चला और प्रेम से वशीभूत होकर एक दूसरे के अच्छे मित्र बन गए।

2-काश मैं आपके मुल्क में आकर यह सब अपनी आँखों से देख सकता। 'हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

2-हामिद खाँ को पता चला कि लेखक हिंदू है तो हामिद ने पूछा -क्या वह मुसलमानी होटल में खाएँगे। तब लेखक ने बताया कि हिंदुस्तान में हिंदू–मुसलमान में कोई भेद नहीं होता है। अच्छा पुलाव खाने के लिए वे मुसलमानी होटल में ही जाते हैं। पहला मस्जिद कोडुंगल्लूर हिंदुस्तान में ही बना। वहाँ हिंदू–मुसलमानों के बीच दंगे नहीं होते। सब बराबर हैं। हामिद को एकदम विश्वास नहीं हुआ लेकिन लेखक के कहने में उसे सच्चाई नज़र आई। वह ऐसी जगह को स्वयं देखकर तसल्ली करना चाहता था।

3-हामिद खाँ ने खाने का पैसा लेने से इंकार क्यों किया?

3-हामिद खाँ को गर्व था कि एक हिंदू ने उनके होटल में खाना खाया। साथ ही वह लेखक को मेहमान भी मान रहा था। वह आने वाले के शहर की हिंदू–मुस्लिम एकता का भी कायल हो गया था। इसलिए हामिद खाँ ने खाने के पैसे नहीं लिए।

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक कौन-सी प्रार्थना करने लगा?

4-सांप्रदायिक दंगों की खबर पढ़कर लेखक को हामिद और उसकी दुकान की याद हो आई। वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगा, "हे भगवान! मेरे हामिद खाँ की दुकान को इस आगजनी से बचा लेना।

5-हामिद खाँ की दुकान का चित्रण कीजिए।
5-हामिद खाँ की दुकान तक्षशिला रेलवे स्टेशन से पौन मील दूरी पर एक गाँव के तंग बाज़ार में थी। उसकी दुकान का आँगन बेतरतीबी से लीपा था तथा दीवारें धूल से सनी थीं। अंदर चारपाई पर हामिद के अब्बा हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। दुकान में ग्राहकों के लिए कुछ बेंच भी पड़े थे।

6-लेखक को हामिद की याद बनी रहे, इसके लिए उसने क्या तरीका अपनाया?
6-भारत जाने पर भी लेखक को हामिद की याद आए, इसके लिए उसने लेखक को भोजन के बदले दिया गया रुपया वापस करते हुए कहा, 'मैं चाहता हूँ कि यह आपके ही हाथों में रहे। जब आप पहुँचे तो किसी मुसलमानी होटल में जाकर इसे पैसे से पुलाव खाएँ और तक्षशिला के भाई हामिद खाँ को याद करें।

7-'तक्षशिला और मालाबार के लोगों में सांप्रदायिक सद्भाव में क्या अंतर है'? हामिद खाँ पाठ के आधार पर लिखिए।
7-तक्षशिला के लोगों में सांप्रदायिकता का बोलबाला था। वहाँ हिंदू और मुसलमान परस्पर शक की निगाह से देखते हैं और एक-दूसरे को मारने-काटने के लिए दंगे और आगजनी करते हैं। इसके विपरीत मालाबार में हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव है। वे मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ नहीं के बराबर दंगे होते हैं।

8-हामिद के भारत आने पर आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते?
8-हामिद के भारत आने पर मैं उसका गर्मजोशी से स्वागत करता। उससे तक्षशिला के सांप्रदायिक वातावरण में आए बदलावों के बारे में पूछता, उसकी दुकान के बारे में पूछता। मैं हामिद को मालाबार के अलावा भारत के अन्य शहरों में ले जाता और हिंदू-मुस्लिम एकता के दर्शन कराता। मैं उसे अपने साथ हिंदू होटलों के अलावा मुस्लिम होटलों में भी खाना खिलाता। उसे हिंदू-मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों से मिलवाता ताकि वह यहाँ के सांप्रदायिकता सौहार्द को स्वयं महसूस कर सके। मैं उसके साथ 'अतिथि देवो भव' परंपरा का पूर्ण निर्वाह करना।

9-हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है, यही हमारी नियति है। ऐसा किसने और क्यों कहा? उसके इस कथन का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?
9-लेखक तक्षशिला की एक सँकरी गली में खाने के लिए कोई ढाबा ढूँढ रहा था कि एक दुकान से चपातियों की सोधी खुशबू आती महसूस हुई। वह दुकान के अंदर चला गया। बातचीत में चपातियाँ सेंकने वाले हामिद ने पूछा, क्या आप हिंदू हैं? लेखक के हाँ कहने पर उसने पूछा आप हिंदू होकर भी मुसलमान के ढाबे पर खाना खाने आए हैं, तो लेखक ने अपने देश हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सद्भाव के बारे में उसे बताया जबकि तक्षशिला में स्थिति ठीक विपरीत थी। वहाँ हामिद जैसों को आततायियों की औलाद माना जाता था। उन

पर हमले किए-कराए जाते थे, इसलिए उसने कहा कि हमें अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता है। उसके इस कथन से लेखक दुखी हुआ।

10-हामिद कौन था? उसे लेखक की किन बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था?

10-हामिद तक्षशिला की सँकरी गलियों में ढाबा चलाने वाला अधेड़ उम्र का पठान था। वह अत्यंत संवेदनशील और विनम्र व्यक्ति था। तक्षशिला में उस जैसों को सांप्रदायिकता का शिकार होना पड़ता था। इससे बचने के लिए उसे आतताइयों से लड़ना-झगड़ना पड़ता था। लेखक ने जब उसे बताया कि उसके यहाँ (मालाबार में) अच्छी चाय पीने और स्वादिष्ट बिरयानी खाने के लिए हिंदू भी मुसलमानों के ढाबे पर जाते हैं तथा हिंदू और मुसलमान परस्पर मिल-जुलकर रहते हैं। इसके अलावा भारत में पहली मस्जिद का निर्माण मुसलमानों ने उसके राज्य के एक स्थान कोंडुगल्लूर में किया था तथा उसके यहाँ हिंदू-मुसलमानों के बीच दंगे नहीं के बराबर होते हैं, तो यह सब सुनकर हामिद को विश्वास नहीं हो रहा था।

==========

पाठ-14-अग्निपथ

कवि - हरिवंशराय बच्चन

कवि परिचय

कवि - हरिवंशराय बच्चन

जन्म - 1907

प्रस्तुत कविता में कवि ने संघर्ष से भरे जीवन को 'अग्नि पथ 'कहते हुए मनुष्य को यह संदेश दिया है कि जीवन में जब कभी भी कठिन समय आता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यही कठिन समय तुम्हारी असली परीक्षा है। यदि मनुष्य को जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे मंजिल तक पहुँचने के रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए मनुष्य कभी भी मेहनत करने से थकेगा नहीं, कभी रुकेगा नहीं और ना ही कभी पीछे मुड़ कर देखेगा। जब कोई मनुष्य किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। कवि कहता है कि अपनी मंजिल पर वही मनुष्य पहुँच पाते हैं जो कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

अग्निपथ पाठ व्याख्या

अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!
वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने, हों बड़े,
एक पत्र छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -

अग्नि पथ - कठिनाइयों से भरा हुआ मार्ग, आगयुक्त मार्ग

पत्र - पत्ता

छाँह - छाया

व्याख्या - कवि मनुष्यों को सन्देश देता है कि जीवन में जब कभी भी कठिन समय आता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यही कठिन समय तुम्हारी असली परीक्षा का है। ऐसे समय में हो सकता है कि तुम्हारी मदद के लिए कई हाथ आगे आएँ, जो हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए सक्षम हो लेकिन हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यदि तुम्हे जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। स्वयं ही अपने रास्ते पर कड़ी मेहनत साथ बढ़ते रहना चाहिए।

तू न थकेगा कभी!
तू न थमेगा कभी!

तू न मुड़ेगा कभी! कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ!
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -

शपथ - कसम, सौगंध

व्याख्या - कवि मनुष्यों को समझाते हुए कहता है कि जब जीवन सफल होने के लिए कठिन रास्ते पर चलने का फैसला कर लो तो मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे मंजिल तक पहुँचाने के रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आए मनुष्य को कभी भी मेहनत करने से थकेगा नहीं, कभी रुकेगा नहीं और ना ही कभी पीछे मुड़ कर देखेगा।

यह महान दृश्य है
चल रहा मनुष्य है
अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ
अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

शब्दार्थ -

अश्रु - आँसू

स्वेद - पसीना

रक्त - खून, शोणित

लथपथ - सना हुआ

व्याख्या - कवि मनुष्यों को सन्देश देते हुए कहता है कि जब कोई मनुष्य किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष देखने योग्य होता है अर्थात दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। कवि कहता है कि अपनी मंजिल पर वही मनुष्य पहुँच पाते हैं जो आँसू, पसीने और खून से सने हुए अर्थात कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

*-बहुवैल्क्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - कवि के अनुसार मनुष्य की असली परीक्षा कब होती है?

(A) कठिन समय में

(B) परीक्षा भवन में

(C) जीवन के अंत में

(D) इनमें से कोई नही

प्रश्न 2 - कवि के अनुसार मनुष्य के कठिन समय में यदि कोई मदद का हाथ बढ़ाता है तो उसे क्या करना चाहिए?

(A) कठिन समय में मदद ले लेनी चाहिए

(B) कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए
(C) उसका हाथ थाम लेना चाहिए
(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3 - कवि के अनुसार जीवन में कौन सफल होता है?
(A) कठिन समय में मदद लेने वाला
(B) कठिन समय में हार मानने वाला
(C) जीवन के हर मोड़ पर दूसरों पर निर्भर रहने वाला
(D) हमेशा मेहनत करने वाला

प्रश्न 4 - कवि के अनुसार कठिन रास्ते पर चलने का फैसला करने वाले मनुष्य को क्या प्रतिज्ञा करनी चाहिए?
(A) वह कभी थकेगा नहीं
(B) वह कभी रुकेगा नहीं
(C) वह कभी पीछे मुड़ कर देखेगा
(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - कवि के अनुसार कौन सा मनुष्य अपनी मंजिल को हासिल कर लेता है?
(A) कठिन समय में हार मानने वाला
(B) जीवन में हमेशा दूसरों पर निर्भर रहने वाला
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाला
(D) किसी भी परिस्थिति में हार न मानने वाला

प्रश्न 6 - कवि के अनुसार किसका संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है?
(A) कठिन समय में हार मानने वाले का
(B) जीवन में हमेशा दूसरों पर निर्भर रहने वाले का
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाले का
(D) किसी भी परिस्थिति में हार न मानने वाले का

प्रश्न 7 - कवि के अनुसार कौन से मनुष्य अंत में अपनी मंजिल को हासिल कर लेते है?
(A) खून-पसीने से लथपथ हो कर आगे बढ़ने वाले
(B) किसी से मदद लेने वाले
(C) जीवन के अंत में हार मानने वाले
(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8 - कवि के अनुसार 'अग्नि-पथ' अर्थ है?

(A) जिस रास्ते पर आग लगी हो

(B) संघर्ष पूर्ण जीवन

(C) आग से सना हुआ रास्ता

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9 - कवि के अनुसार महान दृश्य क्या है?

(A) कठिन समय में भी आगे बढ़ते हुए मनुष्यों को देखना

(B) महान व्यक्तियों के दर्शन करना

(C) जीवन के अंत में हार मानाने वालों को देखना

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 10 - कवि ने कविता में वृक्ष शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

(A) स्वार्थी मनुष्यों को

(B) आलसी मनुष्यों को

(C) कठिन समय में मदद करने वालों को

(D) इनमें से कोई नहीं

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1 - कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?

उत्तर - जीवन में जब कठिनाई का दौर चलता है तभी किसी की असली परीक्षा होती है। ऐसे ही दौर को कवि ने अग्नि पथ के रूप में देखा है।

प्रश्न 2 - 'माँग मत, 'कर शपथ, 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - 'माँग मत, 'कर शपथ, 'लथपथ' इन शब्दों का बार बार प्रयोग करके कवि कई ऐसी भावनाओं को उजागर करता है जो मंजिल को हासिल करने के लिए जरूरी होती हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति और लाख गिरने के बावजूद किसी से मदद की गुहार न करना ही ऐसे समय में सफलता की कुंजी होती है।

प्रश्न 3 - 'एक पत्र छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - हो सकता है कि कठिन दौर में आपकी मदद के लिए कई लोग आगे आएँ। जो हर तरह से आपकी मदद के लिए सक्षम हो लेकिन हमेशा यह याद रखना चाहिए कि यदि आपको जीवन में सफल होना है तो कभी भी किसी भी कठिन समय में किसी की मदद नहीं लेनी चाहिए। स्वयं ही अपने रास्ते पर कड़ी मेहनत साथ बढ़ते रहना चाहिए।

*-निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -

प्रश्न 1 - तू न थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी
उत्तर - जब कठिन रास्ते पर चलना हो तो मनुष्य को एक प्रतिज्ञा करनी चाहिए। वह कभी नहीं थकेगा, कभी नहीं रुकेगा और कभी पीछे नहीं मुड़ेगा।

प्रश्न 2 - चल रहा मनुष्य है, अश्रु, स्वेद, रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ
उत्तर - जब कोई किसी कठिन रास्ते से होते हुए अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो उसका वह संघर्ष देखने योग्य होता है अर्थात दूसरों के लिए प्रेरणा दायक होता है। वही मनुष्य मंजिल पर पहुँच पाते हैं जो आँसू, पसीने और खून से सने हुए अर्थात कड़ी मेहनत कर के आगे बढ़ते हैं।

प्रश्न 3 - इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।
त्तर - इस कविता का मूलभाव यह है की जब कठिन दौर आता है तभी मनुष्य की असली परीक्षा होती है। ऐसे में उसे किसी से मदद नहीं माँगनी चाहिए। ऐसे समय में उसे न तो थकना चाहिए, न ही रुकना चाहिए और न ही पीछे मुड़ना चाहिए। इस प्रयास में हो सकता है कि मनुष्य अपने खून-पसीने से नहा जाए लेकिन उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति ही उसको उसकी मंजिल तक पहुँचा सकती है।

पाठ-15-नए इलाके में और खुश्बू रचे हाथ
कवि - अरुण कमल

*-कवि परिचय नए इलाके में और खुश्बू रचे हाथ

कवि - अरुण कमल

जन्म – 1954

नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ पाठ प्रवेश

प्रस्तुत पाठ की पहली कविता 'नए इलाके में' में कवि ने एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करने के आमंत्राण का उल्लेख किया है, जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। इस कविता के आधार पर कवि इस बात का ज्ञान देना चाहता है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता अर्थात कोई भी वस्तु या जीव हमेशा के लिए नहीं रहते। इस पल-पल बनती और बिगड़ती दुनिया में किसी की भी यादों के भरोसे नहीं जिया जा सकता।

इस पाठ की दूसरी कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने सामाजिक विषमताओं को बेनकाब किया है। इस कविता में कवि ने गरीबों के जीवन पर प्रकाश डाला है। कवि कहता है कि यह किसकी और कैसी कारस्तानी है कि जो वर्ग समाज को सुंदर बनाने में लगा हुआ है और उसे खुशहाल बना रहा है, वही वर्ग अभाव में, गंदगी में जीवन बिता कर रहा है? लोगों के जीवन में सुगंध बिखेरने वाले हाथ बहुत ही भयानक स्थितियों में अपना जीवन बिताने पर मजबूर हैं! क्या विडंबना है कि खुशबू रचने वाले ये हाथ दूरदराज़ के सबसे गंदे और बदबूदार इलाकों में जीवन बिता रहे हैं। स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान करने वाले ये लोग इतने उपेक्षित हैं! कवि यहाँ प्रश्न कर रहा है कि आखिर कब तक ऐसा चलने वाला है?

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ की पहली कविता 'नए इलाके में' में कवि ने एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करने के आमंत्राण का उल्लेख किया है, जो एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है। इस कविता के आधार पर कवि इस बात का ज्ञान देना चाहता है कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता अर्थात कोई भी वस्तु या जीव हमेशा के लिए नहीं रहते।

कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। फिर कवि पुराने गिरे हुए मकान को ढूँढता है परन्तु वह भी उसे अब कही नहीं दिखता। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि को अब बहुत से मकानों के बन जाने से घर का रास्ता ढूँढने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कवि कहता है जहाँ पर रोज ही कुछ नया बन रहा हो और कुछ मिटाया जा रहा हो, वहाँ पर अपने घर का रास्ता ढूँढने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकते। कवि कहता है कि एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है।

ऐसा लगता है जैसे महीनों बाद लौटा हूँ। कवि कहता है कि अब सही घर ढूँढने का एक ही उपाय है कि हर दरवाजे को खटखटा कर पूछो कि क्या वह सही घर है।

इस पाठ की दूसरी कविता 'खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने सामाजिक विषमताओं को बेनकाब किया है। इस कविता में कवि ने गरीबों के जीवन पर प्रकाश डाला है। कवि कहता है कि अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर है।

ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार और बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप होता है। कवि कहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं। कवि कहता है कि दूसरों के लिए खुशबू बनाने वाले खुद न जाने कितनी और कैसी तकलीफों का सामना करते हैं। कवि कहता है कि यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ पाठ व्याख्या

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ

शब्दार्थ -

इलाका - क्षेत्र
अकसर - प्रायः, हमेशा

व्याख्या - कवि कहता है कि शहर में नये मुहल्ले रोज ही बसते हैं। ऐसी जगहों पर रोज नये-नये मकान बनते हैं। रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण कोई भी व्यक्ति ऐसे इलाके में रास्ता भूल सकता है। कवि को भी यही परेशानी होती है। वह भी इन मकानों के बीच अपना रास्ता हमेशा भूल जाता है।

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढ़हा हुआ घर
और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुडना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

शब्दार्थ -

ताकता - देखता

ढहा - गिरा हुआ, ध्वस्त
फाटक - दरवाजा
व्याख्या - कवि कहता है कि जो पुराने निशान हैं वे धोखा दे जाते हैं क्योंकि कुछ पुराने निशान तो सदा के लिए मिट जाते हैं। कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। फिर कवि पुराने गिरे हुए मकान को ढूँढता है परन्तु वह भी उसे अब कही नहीं दिखता। कवि कहता है कि पहले तो उसे घर का रास्ता ढूँढने के लिए जमीन के खाली टुकड़े के पास से बाएँ मुड़ना पड़ता था और उसके बाद दो मकान के बाद बिना रंगवाले लोहे के दरवाजे वाले इकमंजिले मकान में जाना होता था। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि को अब बहुत से मकानों के बन जाने से घर का रास्ता ढूँढने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता
यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं

शब्दार्थ -
ठकमकाता - धीरे-धीरे, डगमगाते हुए
स्मृति - याद

व्याख्या - कवि कहता है कि अपने घर जाते हुए वह हर बार या तो अपने घर से एक घर पीछे ठहर जाता है या डगमगाते हुए अपने घर से दो घर आगे ही बढ़ जाता है। कवि कहता है जहाँ पर रोज ही कुछ नया बन रहा हो और कुछ मिटाया जा रहा हो, वहाँ पर अपने घर का रास्ता ढूँढने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा नहीं कर सकते।

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो – क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढ़हा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर

शब्दार्थ -
वसंत - छह ऋतुओं में से एक

पतझड़ - एक ऋतु जब पेड़ों के पत्ते झड़ते हैं
वैसाख (वैशाख) - चैत (चैत्र) के बाद आने वाला महीना
भादों - सावन के बाद आने वाला महीना
अकास (आकाश) - गगन
व्याख्या - कवि कहता है कि एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसा लगता है जैसे महीनों बाद लौटा हूँ। ऐसा लगता है जैसे घर से बसंत ऋतु में बाहर गया था और पतझड़ ऋतु में लौट कर आया हूँ।
जैसे बैसाख ऋतु में गया और भादों में लौटा हो। कवि कहता है कि अब सही घर ढूँढने का एक ही उपाय है कि हर दरवाजे को खटखटा कर पूछो कि क्या वह सही घर है। कवि कहता है कि उसके पास अपना घर ढूँढने लिए बहुत कम समय है क्योंकि अब तो आसमान से बारिश भी आने वाली है और कवि को उम्मीद है कि कोई परिचित उसे देख लेगा और आवाज लगाकर उसे उसके घर ले जाएगा।
पाठ व्याख्या - (खुशबू रचते हैं हाथ)
नई गलियों के बीच
कई नालों के पार
कूड़े करकट
के ढ़ेरों के बाद
बदबू से फटते जाते इस
टोले के अंदर
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ!
शब्दार्थ-
नालों - घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाया गया रास्ता
कूड़ा-करकट - रद्दी, कचरा
टोले - छोटी बस्त
व्याख्या - कवि कहता है कि अगरबत्ती का इस्तेमाल लगभग हर व्यक्ति करता है। अगरबत्ती हालाँकि पूजा पाठ में इस्तेमाल होती है लेकिन इसकी खुशबू ही शायद वह वजह होती है कि लोग इसे प्रतिदिन इस्तेमाल करते हैं।
इस कविता में कवि ने उन खुशबूदार अगरबत्ती बनाने वालों के बारे में बताया है जो खुशबू से कोसों दूर है। ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि अगरबत्ती का कारखाना अकसर किसी तंग गली में, घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार और बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप होता है। ऐसे स्थानों पर कई कारीगर अपने हाथों से अगरबत्ती को बनाते हैं।
उभरी नसोंवाले हाथ
घिसे नाखूनोंवाले हाथ

पीपल के पत्ते से नए नए हाथ
जूही की डाल से खुशबूदार हाथ
गंदे कटे पिटे हाथ
जख्म से फटे हुए हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ!
शब्दार्थ -
शख्म - घाव, चोट
व्याख्या - कवि कहता है कि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं। कवि कहता है कि दूसरों के लिए खुशबू बनाने वाले खुद न जाने कितनी और कैसी तकलीफों का सामना करते हैं।
यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ
इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग
बनाते हैं केवड़ा गुलाब खस और रातरानी अगरबत्तियाँ
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ
खुशबू रचते हैं हाथ।
शब्दार्थ -
मुल्क - देश
केवड़ा - एक छोटा वृक्ष जिसके फूल अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं
खस - पोस्ता
रातरानी - एक सुगंधित फूल
मशहूर - प्रसिद्ध

व्याख्या - कवि कहता है कि इसी तंग गली में पूरे देश की प्रसिद्ध अगरबत्तियाँ बनती हैं। उस गंदे मुहल्ले के गंदे लोग (गरीब लोग) ही केवड़ा, गुलाब, खस और रातरानी की खुशबू वाली अगरबत्तियाँ बनाते हैं। यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है|

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर –

प्रश्न 1 - कवि के अनुसार शहर में हर दिन क्या होता है?

(A) शोर-शराबा

(B) मकानों का निर्माण

(C) त्यौहार

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 2 - रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण क्या होता है?

(A) शोर-शराबा

(B) भीड़

(C) त्यौहार

(D) कोई भी व्यक्ति रास्ता भूल सकता है

प्रश्न 3 - पुराने निशानों के मिट जाने से कवि को क्या परेशानी होती है?

(A) यह उन्हें याद करता है

(B) पुराने निशान पुरानी यादों को ताज़ा करते हैं

(C) निशानों के मिट जाने से रास्ता खोजना मुश्किल है

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 4 - अपना रास्ता ढूँढने के लिए कवि किसका सहारा लेता था?

(A) पीपल के पेड़ का

(B) पुराने गिरे हुए मकान का

(C) जमीन के खाली टुकड़े का

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - कवि के अनुसार रास्ता ढूँढने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा क्यों नहीं कर सकते?

(A) शोर-शराबे के कारण

(B) यादाश्त कमजोर होने के

(C) अधिक मकानों के बन जाने के कारण

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 6 - एक ही दिन में सबकुछ इतना कैसे बदल जाता है?

(A) शोर-शराबे के कारण

(B) हर दिन नए मकानों के निर्माण के कारण

(C) पेड़ों को काटने के कारण

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 7 - कवि के अनुसार सही घर ढूंढने का क्या उपाय है?

(A) हर दरवाजे को खटखटा कर पूछना

(B) हर इंसान से पूछना

(C) किसी परिचत का इंतज़ार करना

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 8 - कवि को अंत में क्या उम्मीद है?

(A) शोर-शराबा कम होने का

(B) मकानों का निर्माण कम होने का

(C) अपना घर मिल जाने का

(D) किसी परिचत के आने का

प्रश्न 9 - कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?

(A) पीपल का पेड़

(B) ढ़हा हुआ मकान

(C) लोहे का बिना रंगवाला गेट

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?

(A) महीनों बाद लौटने से

(B) महीनों के बीतने से

(C) नया महीना आने से

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 11 - कवि का 'खुशबू रचते हैं हाथ' से क्या अभिप्राय है?

(A) अगरबत्ती बनाने वाले हाथों से

(B) गुलदस्ता बनाने वालों से

(C) इत्र बनाने वालों से

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 12 - अगरबत्ती का कारखाना अकसर कहाँ होता है?

(A) किसी तंग गली में

(B) घरों और सड़कों के किनारे गंदे पानी के बहाव के लिए बनाए गए रास्ता के पार

(C) बदबूदार कूड़े के ढेर के समीप

(D) उपरोक्त सभी

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 - नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?
उत्तर - नये बसते इलाके में रोज रोज नये-नये मकान बनते हैं। कवि के साथ अक्सर ऐसा होता है कि वह अपना रास्ता ढूँढने के लिए पीपल के पेड़ को खोजता है परन्तु हर जगह मकानों के बनने के कारण उस पीपल के पेड़ को काट दिया गया है। इससे आसपास का नजारा बदल जाता है और पुराने निशान गायब हो जाते हैं। इसलिए कवि रास्ता भूल जाता है।

प्रश्न 2 - कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?
उत्तर - पीपल का पेड़, ढ़हा हुआ मकान, लोहे का बिना रंगवाला गेट

प्रश्न 3 - कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?
उत्तर - कवि हर दिन नए-नए घर बन जाने से अपने घर को नहीं ढूँढ पाता है और इसलिए एक घर पीछे या दो घर आगे चल देता है।

प्रश्न 4 - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर - 'वसंत का गया पतझड़' और 'बैसाख का गया भादों को लौटा' से अभिप्राय महीनों बाद लौटने से है।

प्रश्न 5 - कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर क्यों इशारा किया है?
उत्तर - जल्दी से सही पता न मिलने पर हो सकता है कि कवि की परेशानियाँ बढ़ जाएँ। हो सकता है उसे बिना वजह किसी होटल में किराये पर कमरा लेना पड़े, या प्लेटफॉर्म पर रात बितानी पड़े। हो सकता है कि कवी के घर में कोई महत्वपूर्ण काम चल रहा हो। इसलिए कवि ने इस कविता में 'समय की कमी' की ओर इशारा किया है। ।

प्रश्न 6 - इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?
उत्तर - इस कविता में कवि ने शहरों के लगातार बदलते स्वरूप की ओर संकेत किया है। शहर में कुछ भी स्थाई नहीं होता। सब कुछ इतनी तेजी से बदलता है कि लोग हक्के बक्के रह जाते हैं और अपने घर का रास्ता भी भूल जाते हैं।

*-व्याख्या कीजिए -

प्रश्न 1 - यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं, एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
उत्तर - एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसे में कोई पता ढूँढने के लिए याददाश्त पर भरोसा करने से कोई लाभ नहीं होता।

प्रश्न 2 - समय बहुत कम है तुम्हारे पास, आ चला पानी ढ़हा आ रहा अकास, शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर

उत्तर - जल्दी से सही पता न मिलने पर हो सकता है कि कवि की परेशानियाँ बढ़ जाएँ। हो सकता है उसे बिलावजह किसी होटल में किराये पर कमरा लेना पड़े, या प्लेटफॉर्म पर रात बितानी पड़े। हो सकता है कि कवी के घर में कोई महत्वपूर्ण काम चल रहा हो। ऐसे में यदि कोई परिचित देख ले और आवाज लगा दे तो कवि का काम आसान हो जाएगा।

प्रश्न अभ्यास (खुशबू रचते हैं हाथ)-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1 - 'खुशबू रचनेवाले हाथ' कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ कहाँ रहते हैं?

उत्तर - 'खुशबू रचनेवाले हाथ' अर्थात अगरबत्ती बनाने वाले गरीब तबके के लोग होते हैं। ऐसे लोग तंग गलियों में, बदबूदार नाले के किनारे और कूड़े के ढ़ेर के बीच रहते हैं। बड़े शहरों की किसी भी झोपड़पट्टी में आपको ऐसा ही नजारा आसानी से देखने को मिलेगा।

प्रश्न 2 - कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?

उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं।

प्रश्न 3 - कवि ने यह क्यों कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'?

उत्तर - अगरबत्ती का काम है खुशबू फैलाना। ये अगरबत्तियाँ हाथों से बनाई जाती हैं। इसलिए कवि ने कहा है कि 'खुशबू रचते हैं हाथ'।

प्रश्न 4 - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

उत्तर - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल अगरबत्ती की मोहक खुशबू के ठीक विपरीत होता है। अगरबत्ती निर्माण एक कुटीर उद्योग है। ज्यादातर कारीगर किसी झोपड़पट्टी में रहते हैं; जहाँ बहुत ज्यादा गंदगी और बदबू होती है।

प्रश्न 5 - इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर - इस कविता के माध्यम से कवि ने कामगारों और मजदूरों की भयावह जिंदगी को उजागर किया है। कवि ने यह दिखाने की कोशिश की है कि ऐसे मजदूर जो दूसरों के लिए खुशबू या खुशहाली का निर्माण करते हैं खुद कितनी बदहाली में रहते हैं और कितनी विषम परिस्थिति में काम करते हैं।

*-व्याख्या कीजिए -

प्रश्न 1 - पीपल के पत्ते से नए-नए हाथ, जूही की डाल से खुशबूदार हाथ

उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ तरह-तरह के होते हैं। किसी के हाथों में उभरी हुई नसें होती हैं। किसी के हाथों के नाखून घिसे हुए होते हैं। कुछ बच्चे भी काम करते हैं जिनके हाथ पीपल के नये पत्तों की तरह कोमल होते हैं। कुछ कम उम्र की लड़कियाँ भी होती हैं जिनके हाथ जूही के फूल की डाल की तरह खुशबूदार होते हैं। कुछ कारीगरों के हाथ गंदे, कटे-पिटे और चोट के कारण फटे हुए भी होते हैं।

प्रश्न 2 - दुनिया की सारी गंदगी के बीच, दुनिया की सारी खुशबू रचते रहते हैं हाथ

उत्तर - जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल अगरबत्ती की मोहक खुशबू के ठीक विपरीत होती है। यह एक विडंबना ही है कि दुनिया की सारी खुशबू उन गलियों में बनती है जहाँ दुनिया भर की गंदगी समाई होती है।

प्रश्न 3 - कवि ने इस कविता में 'बहुवचन' का प्रयोग अधिक किया है? इसका क्या कारण है?

उत्तर - अगरबत्ती हम जब भी खरीदते हैं तो हम कभी एक अगरबत्ती नहीं बल्कि एक पूरा अगरबत्ती का पैकेट खरीदते हैं। उसी तरह, अगरबत्ती बनाने वाले झुंड में काम करते हैं। उनकी समस्याएँ भी अनेक होती हैं। इसलिए कवि ने इस कविता में बहुवचन का प्रयोग अधिक किया है।

प्रश्न 4 - कवि ने हाथों के लिए कौन-कौन से विशेषणों का प्रयोग किया है?

उत्तर - अगरबत्ती बनाने वाले कारीगरों के हाथ किस्म किस्म के होते हैं और उनका वर्णन करने के लिए कवि ने तरह तरह के विशेषणों का उपयोग किया है। कवि ने किसी हाथ की उभरी हुई नसें दिखाई है, तो किसी के घिसे नाखून। किसी हाथ की कोमलता दिखाई है तो किसी की कठोरता।

संचयन –पाठ-6
दीये जल उठे

*-सार-

दिए जल उठे' कहानी आज़ादी के लिए प्रयत्नशील भारत की महत्वपूर्ण घटना पर आधारित है। जब वल्लभभाई पटेल के आह्वान पर पूरा भारत 'दांडी कूच' के लिए तैयार था। इस कूच को असफल बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने उनको तीन महीने के कारावास में डाल दिया। गांधी जी को वल्लभभाई पटेल की इस तरह से हुई गिरफ्तारी अच्छी नहीं लगी और उन्होंने स्वयं इस यात्रा का नेतृत्व किया। यह यात्रा साबरमती से आरंभ हुई। गांधी जी बोरसद से होते हुए रास गए वहाँ उन्होंने जनता का आह्वान किया। वहाँ से वह कनकापुरा पहूँचे। इस दांडी कूच का उद्देश्य था लोगों के अंदर आजादी के लिए जोश पैदा करना, सत्याग्रह के जनता को तैयार करना व बिटिश शासन से पूर्णस्वराज की माँग करना। कनकापुरा से नदी आधी रात में पार करनी थी लेकिन आधी रात में अंधेरा इतना गहरा था की कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। तभी गांधीजी व आज़ादी के अन्य सिपाहियों का उत्साह बढ़ाने के लिए नदी के तट पर दोनों ओर हजारों दिए जल उठे। हजारों लोग हाथों में दिए लेकर खड़े हो गए ताकि लोगों को नदी पार करने में कोई परेशानी न हो। यह कहानी उस एकता का साक्ष्य है जो आज़ादी के समय में थी। लोगों का एक ही उद्देश्य था, भारत को गुलामी के बंधन से मुक्त करवाना और अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ना।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - लेखक 'दिए जल उठे' पाठ में किसका वर्णन कर रहा है ?
(क) गाँधी जी का
(ख) दांडी यात्रा का
(ग) दांडी यात्रा की तैयारी का
(घ) गाँधी जी के स्वभाव का
प्रश्न 2 - सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने भाषण में क्या कहा?
(क) लोगों को गाँधी जी का साथ देने को कहा
(ख) दांडी यात्रा में योगदान देने की बात कही
(ग) दांडी यात्रा की तैयारी का वर्णन किया
(घ) लोगों को सत्यग्रह के लिए तैयार रहने को कहा
प्रश्न 3 - सरदार वल्लभभाई पटेल को क्यों गिरफ्तार किया गया?
(क) गाँधी जी का साथ देने के कारण
(ख) मनाही के आदेश की अवहेलना करने के कारण

(ग) दांडी यात्रा की तैयारी पर भाषण देने के कारण

(घ) लोगों को सत्यग्रह के लिए तैयार रहने के लिए कहने के कारण

प्रश्न 4 - सरदार वल्लभभाई पटेल को किसने गिरफ्तार किया?

(क) अंग्रेजी सरकार के आदेश पर

(ख) स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर

(ग) अदालत के आदेश पर

(घ) गाँधी जी के आदेश पर

प्रश्न 5 - जज को अपना आठ लाइन का फैसला लिखने में कितना समय लगा?

(क) डेढ़ घंटा

(ख) एक घंटा

(ग) ढ़ाई घंटा

(घ) दो घंटे

प्रश्न 6 - जज का फैसला कितनी लाइन का था?

(क) सात

(ख) आठ

(ग) नौ

(घ) पाँच

प्रश्न 7 - जज के फैसले के अनुसार सरदार वल्लभभाई पटेल को क्या सजा सुनाई गई?

(क) 500 रुपए और तीन महीने की सजा

(ख) 500 रुपए और तीन साल की सजा

(ग) 500 रुपए और तीन सप्ताह की सजा

(घ) 500 रुपए और एक साल की सजा

प्रश्न 8 - दांडी कूच के लिए कौन सी तारीख तय की गई थी?

(क) 2 मार्च

(ख) 18 मार्च

(ग) 15 मार्च

(घ) 12 मार्च

प्रश्न 9 - लेखक के अनुसार पुलिस वालों ने गाड़ी को साबरमती आश्रम के आगे क्यों रोका?

(क) गाँधी जी के रोब के कारण

(ख) सरदार वल्लभभाई पटेल के रोब के कारण

(ग) सत्यग्रहियों के कारण

(घ) गाँधी जी के स्वभाव के कारण

प्रश्न 10 - जब गाँधी जी रास पहुँचे तो वहाँ पर गांधी जी का शानदार स्वागत किसने किया?

(क) गाँधी जी के सत्यग्रह के साथियों ने

(ख) दरबार समुदाय के लोगों ने

(ग) गोपालदास और रविशंकर महाराज

(घ) अब्बास तैयबजी ने

*-प्रश्नोंत्तर -

1: किस कारण से प्रेरित हो स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया?

उत्तर: वहाँ पर निषेधाज्ञा लागू थी और इसलिए कोई भी सभा करना मना था। पटेल ने निषेधाज्ञा तोड़ी थी।

इसलिए स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

2: जज को पटेल की सजा के लिए आठ लाइन के फैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा? स्पष्ट करें।

उत्तर: जब पटेल को जज के सामने पेश किया गया तो उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। जज की समझ में नहीं आ रहा था कि पटेल को किस धारा के अंतर्गत सजा सुनाई जाए। इसी उधेड़बुन में जज को

फैसला लिखने में डेढ़ घंटा लग गया।

3: "मैं चलता हूँ। अब आपकी बारी है।" - यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पाठ में जिस आंदोलन की बात की गई है, वह एक बहुत ही बड़ा आंदोलन था। कोई भी बड़ा आंदोलन केवल एक व्यक्ति द्वारा संपन्न नहीं होता है। इस काम में हजारों, लाखों लोगों के मेहनत की आवश्यकता होती है। पटेल उस आंदोलन के एक मुख्य नेता थे लेकिन उनकी गिरफ्तारी से वह आंदोलन रुकने वाला नहीं था। पटेल को पता था कि उनकी अनुपस्थिति में गांधीजी समेत बाकी नेता और कार्यकर्ता उस आंदोलन को आगे बढ़ाएँगे। इसलिए पटेल ने ऐसा कहा।

4: "इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें" - गांधीजी ने यह कथन किसके लिए और किस संदर्भ में कहा?

उत्तर: गांधीजी ने यह बात दरबार समुदाय के लोगों के बारे में कही थी। दरबार लोग रियासती होते थे। उनका जीवन ऐशो आराम में कटता था। फिर भी वे सबकुछ छोड़कर रास में रहने के लिए चले आये थे। इसलिए गांधीजी ने ऐसा कहा।

5: पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि – "कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है।" अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: माही नदी को पार करने में कई दिक्कतें थीं। उस नदी को रात में पार करने का विचार किया गया ताकि पानी का स्तर ऊँचा हो और कीचड़ में न चलना पड़े। रात के घुप्प अंधेरे में कमजोर दियों

की कोई औकात नहीं थी। लोगों ने हजारों दिये जला लिए जिससे काम भर की रोशनी हो गई। उसी रोशनी में गांधीजी समेत अन्य लोगों ने नदी पार किया। स्मरण रहे कि उस जमाने में वहाँ पर कोई बिजली या जनरेटर नहीं था। यह प्रकरण दिखाता है कि तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से कठिन परिस्थिति का भी सामना किया जा सकता है।

6: महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
उत्तर: महिसागर नदी के दोनों ओर का रास्ता बड़ा ही दुर्गम था क्योंकि वहाँ कीचड़ से होकर गुजरना पड़ता था। घुप्प अंधेरा छाया हुआ था। लेकिन लगभग हर व्यक्ति के हाथ में एक-एक दिया था जिससे झिलमिल रोशनी की कतारें नजर आ रहीं थीं। लगता था कि मार्च के महीने में ही नदी के दोनों किनारों पर दिवाली मनाई जा रही हो। उस रात के अंधेरे में भी हजारों लोगों के कोलाहल से उनका उत्साह साफ मालूम हो रहा था।
7: "यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।" – गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है?
उत्तर: गांधीजी अपनी धुन के पक्के व्यक्ति थे। वे एक बार किसी काम पर लग जाते थे तो उसे तब तक करते रहते थे जब तक कि उनका काम पूरा न हो जाए। इस बीच आने वाली हर कठिनाई का सामना करने के लिए वे तैयार रहते थे। वह कार्यकर्ताओं और जनता के साथ रहकर उनके जैसी परिस्थितियों का सामना करने को तैयार रहते थे।
8: गांधी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। फिर भी उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए?
उत्तर: ब्रिटिश अधिकारी इस बात से आश्वस्त थे कि गांधी को जो भी करना होगा वह तय कार्यक्रम के अनुसार ही करेंगे। फिर भी रास्ते में कई ऐसे स्थान पड़ते थे जहाँ आसानी से नमक बनाया जा सकता था। उन्हें शायद इस बात का डर रहा होगा कि गांधीजी कहीं जनता के दबाव में आकर तय समय से पहले ही नमक बना दें। इसलिए ब्रिटिश अधिकारी कोई खतरा नहीं उठाना चाहते थे।
9: गांधीजी के पार उतरने पर भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे?
उत्तर: गांधीजी के पार उतरने के बाद भी कई सत्याग्रहियों को नदी पार करना बाकी था। और लोगों के भी आने की संभावना थी। इसलिए गांधीजी के पार उतरने के बाद भी लोग नदी तट पर खड़े रहे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर
प्रश्न 1.गांधी जी और पटेल की मुलाकात आश्रम के सामने सड़क पर क्यों हुई?
उत्तर-सरदार पटेल को बोरसद की अदालत में 500 रुपए जुर्माने के साथ तीन महीने की जेल की सजा हुई। इसके लिए उन्हें अहमदाबाद की साबरमती जेल में लाया जा रहा था। जेल का रास्ता आश्रम से होकर जाता था। गांधी जी उनसे मिलने आश्रम से बाहर सड़क पर आ गए थे, जहाँ दोनों नेताओं की मुलाकात हुई।

प्रश्न 2.रास में गांधी जी ने लोगों से सरकारी नौकरी के संबंध में क्या आह्वान किया?
उत्तर-रास में गांधी जी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पटेल को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। ऐसे में कुछ मुखी और तलाटी अब भी सरकारी नौकरी से चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।
प्रश्न 3.नदी पार करने के लिए सत्याग्रहियों ने रात दस बजे के बाद का समय क्यों चुना?
उत्तर-मही नदी के दोनों ओर दूर-दूर तक दलदल और कीचड़ था। इसी कीचड़ एवं दलदल में कई किलोमीटर पैदल चलकर नाव तक पहुँचना था। रात बारह बजे समुद्र का पानी नदी में चढ़ आता है जिससे कीचड़ एवं दलदल पर पानी भर जाता है और नाव चलने योग्य हो जाती है।
प्रश्न 4.रघुनाथ काका ने सत्याग्रहियों की मदद किस तरह की?
उत्तर-रघुनाथ काका ने गांधी जी एवं अन्य सत्याग्रहियों को नदी पार कराने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। वे एक नई नाव खरीदकर कनकापुरा पहुँच गए। गांधी जी उस नाव पर सत्याग्रहियों के साथ सवार हुए और रघुनाथ काका नाव चलाते हुए दूसरे किनारे पर ले गए।
प्रश्न 5.सरदार पटेल की गिरफ्तारी पर देश में क्या-क्या प्रतिक्रिया हुई ?
उत्तर-रास में मजिस्ट्रेट द्वारा निषेधाज्ञा लगवाकर गिरफ्तार करवाने से देश में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं। मदनमोहन मालवीय ने केंद्रीय असेंबली में प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पटेल पर मुकदमा चलाए बिना जेल भेज देने की निंदा की गई। इसी प्रस्ताव के संबंध में मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था कि सरदार बल्लभ भाई की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत पर है। गांधी जी भी पटेल की इस तरह की गिरफ्तारी से बहुत क्षुब्ध थे।
प्रश्न 6.महिसागर के दूसरे तट की स्थिति कैसी थी? 'दिये जल उठे' पाठ के आधार पर लिखिए।
उत्तर-महिसागर के दूसरे तट की स्थिति भी पहले तट के जैसी ही थी। यहाँ की जमीन भी दलदली और कीचडयुक्त थी। यहाँ भी गांधी जी को करीब डेढ़ किलोमीटर तक पानी और कीचड़ में चलकर किनारे पहुँचना पड़ा। यहाँ भी गांधी जी के विश्राम के लिए झोपड़ी पहले से तैयार कर दी गई थी।
प्रश्न 7.गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान किस तरह की राय रखते थे?
उत्तर-गांधी जी के प्रति ब्रिटिश हुक्मरान दो प्रकार की राय रखते थे। इनमें से एक वर्ग को ऐसा लगता था कि गांधी जी अचानक नमक बनाकर कानून तोड़ देंगे, जबकि गांधी जी को निकट से जानने वाले अधिकारी इस बात से सहमत न थे। उनका मानना था कि गांधी जी इस तरह कोई काम चुपके से नहीं करेंगे।
प्रश्न 8.कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में परिवर्तन क्यों कर दिया गया?
उत्तर-कनकापुरा में गांधी जी की सभा के बाद आगे की यात्रा में इसलिए परिवर्तन कर दिया गया क्योंकि नदी में आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ आता था। इससे कीचड़ और दलदल में कम चलना पड़ता। इसके विपरीत नदी में पानी कम होने पर नाव तक पहुँचने के लिए ज्यादा दूरी कीचड़ और दलदल में तय करनी पड़ती।

प्रश्न 9.महिसागर नदी का किनारा उस दिन अन्य दिनों से किस तरह भिन्न था? इस अद्भुत दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-गांधीजी और अन्य सत्याग्रही पानी चढ़ने का इंतजार कर रहे थे। रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया, गांधीजी झोपड़ी से बाहर आए और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। इसी बीच महात्मागांधी की जय, नेहरु जी की जय, सरदार पटेल की जय के नारों के बीच नाव रवाना हुई । इसे रघुनाथ काका चला रहे थे। कुछ ही देर में नदी के दूसरे किनारे से भी ऐसी ही आवाज़ गूंजने लगी।

प्रश्न 10.कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार के बारे में क्या कहा?

उत्तर-कनकापुरा की जनसभा में गांधी जी ने अंग्रेज़ सरकार और उसके कुशासन के बारे में यह कहा कि इस राज में रंक से राजा तक सभी दुखी हैं। राजे-महाराजे भी उसी तरह नाचने को तैयार हैं, जैसे सरकार नचाती है। यह राक्षसी राज है। इसका संहार करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1.अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं और किन मानवीय मूल्यों के कारण गांधी जी देशभर में लोकप्रिय हो गए थे?

उत्तर-गांधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। वे झूठ एवं छल का सहारा लेकर कोई काम नहीं करते थे। उनकी इस चारित्रिक विशेषता को भारतीय ही नहीं अंग्रेज़ भी समझते थे। इसके अलावा गांधी जी अपने आराम के लिए दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहते थे। स्वाधीनता की लड़ाई को वे धार्मिक कार्य मानकर निष्ठा, लगन, ईमानदारी से कर रहे थे। उनके उदार स्वभाव, दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति और सेवा भावना ने उन्हें देशभर में लोकप्रिय बना दिया। अपने नेतृत्व क्षमता के कारण वे स्वाधीनता आंदोलन के अगुआ थे। उनके एक आह्वान पर देश उनके पीछे चल देता था। इस प्रकार कार्य के प्रति समर्पण, उदारता, परोपकारिता, सत्यवादिता आदि मानवीय मूल्यों के कारण वे देशभर में लोकप्रिय हो गए थे।

प्रश्न 2.सरदार पटेल के चरित्र से आप किन-किन मूल्यों को अपनाना चाहेंगे?

उत्तर-सरदार बल्लभ भाई पटेल देश को आजादी दिलाने वाले नेताओं में प्रमुख स्थान रखते थे। वे अत्यंत जुझारू प्रवृत्ति के नेता थे। त्याग, साहस, निष्ठा, ईमानदारी जैसे मानवीय मूल्य उनमें कूट-कूटकर भरे थे। उनमें गजब की नेतृत्व क्षमता थी। उनके चरित्र से मैं नि:स्वार्थ भाव से काम करने की प्रवृत्ति, कार्य के प्रति समर्पण, साहस, ईमानदारी और कार्य के प्रति जुझारूपन दिखाने जैसे मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहूँगा। मैं अपने राष्ट्र के लिए उनके समान तन-मन और धन त्यागने का गुण एवं साहस बनाए रखना चाहूँगा। दिये जल उठे

प्रश्न 3.पटेल और गांधी जी जैसे नेताओं ने देश के लिए अपना चैन तक त्याग दिया था। आप अपने देश के लिए क्या करना चाहेंगे?

उत्तर-गांधी और पटेल अत्यंत उच्च कोटि के देशभक्त एवं नेता था। उनके जैसा त्याग करना सामान्य

आदमी के बस की बात नहीं। उनमें नि:स्वार्थ काम करने की जन्मजात भावना थी। उन्हीं लोगों से प्रेरित होकर मैं अपने देश के लिए निम्नलिखित कार्य करना चाहूँगा-

मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दूंगा।

अपने देश से प्रेम और सच्चा लगाव रबँगा।

अपने देश की बुराई भूलकर भी नहीं करूंगा, न सुनूंगा।

देश को साफ़-सुथरा बनाने का प्रयास करूंगा।

देश की समस्याओं के समाधान में अपना योगदान दूंगा।

देश की उन्नति एवं शान बढ़ाने वाले काम करूंगा।

प्रश्न 4.नेहरू जी गांधी जी से कब मिलना चाहते थे? इस पर गांधी जी ने क्या कहा?

उत्तर-नेहरू जी 21 मार्च को होने वाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक से पहले गांधी जी से मिलना चाहते थे। इस पर गांधी जी ने कहा कि उन तक पहुँचना कठिन है। तुमको पूरी एक रात का जागरण करना पड़ेगा। अगर कल रात से। पहले वापस लौटना चाहते हो, तो इससे बचा भी नहीं जा सकता। मैं उस समय जहाँ भी रहूँगा, संदेशवाहक तुमको वहाँ तक ले आएगा। इस प्रयाण की कठिनतम घड़ी में तुम मुझसे मिल रहे हो। तुमको रात के लगभग दो बजे जाने-परखे मछुआरों के कंधों पर बैठकर एक धारा पार करनी पड़ेगी। मैं राष्ट्र के प्रमुख सेवक के लिए भी प्रयाण में जरा भी विराम नहीं दे सकता।

प्रश्न 5.रास की जनसभा में गांधी जी ने लोगों को किस तरह स्वतंत्रता के प्रति सचेत किया?

उत्तर-रास की आबादी करीब तीन हज़ार थी, लेकिन उनकी जनसभा में बीस हजार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गांधी ने पटेल की गिरफ़्तारी का जिक्र करते हुए कहा, "सरदार को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि कुछ मुखी और तलाटी 'गंदगी पर मक्खी की तरह' चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफा दे देना चाहिए।" उन्होंने कहा, "आप लोग कब तक गाँवों को चूसने में अपना योगदान देते रहेंगे। सरकार ने जो लूट मचा रखी है उसकी ओर से क्या अभी तक आपकी आँखें खुली नहीं हैं?"

प्रश्न 6.रासे में गांधी जी को किस तरह स्वागत हुआ? उन्होंने रास में रहने वाले दरबारों का उदाहरण किस संदर्भ में दिया?

उत्तर-रास में गांधी का भव्य स्वागत हुआ। दरबार समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे। दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज वहाँ मौजूद थे। गांधी ने अपने भाषण में दरबारों को खासतौर पर उल्लेख किया। कुछ दरबार रास में रहते हैं, पर उनकी मुख्य बस्ती कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में है। दरबार लोग रियासतदार होते थे। उनकी साहबी थी, ऐशो-आराम की ज़िंगदी थी, एक तरह का राजपाट था। दरबार सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए। गांधी ने कहा, "इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।

पाठ-8-"शुक्रतारे के समान"
लेखक - स्वामी आनंद

लेखक परिचय
लेखक - स्वामी आनंद
जन्म - 1887

*-शुक्रतारे के समान पाठ सार

लेखक कहता है कि आकाश के तारों में शुक्र का कोई जोड़ नहीं है कहने का तात्पर्य यह है कि शुक्र तारा सबसे अनोखा है। भाई महादेव जी आधुनिक भारत की स्वतंत्रता के उषा काल में अपनी वैसी ही चमक से हमारे आकाश को जगमगाकर, देश और दुनिया को मुग्ध करके, शुक्र तारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए अर्थात उनका निधन हो गया। लेखक यह भी कहता है कि सेवा-धर्म का पालन करने के लिए इस धरती पर जन्मे स्वर्गीय महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। गांधीजी के लिए महादेव पुत्र से भी अधिक थे। लेखक कहता है कि सन् 1919 में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ़तार किया गया था। गांधीजी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेज़ी दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून'के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा मिली। लेखक कहता है कि गांधीजी के सामने ज़ुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर इकट्ठे आते रहते थे। महादेव उनकी बातों को विस्तार से सुनकर छोटे रूप में तैयार करके उनको गांधीजी के सामने पेश करते थे और आने वालों के साथ गांधीजी की आमने-सामने मुलाकातें भी करवाते थे।

लेखक कहता है कि शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास उन दिनों बंबई के तीन नए नेता थे। इनमें अंतिम जमनादास द्वारकादास श्रीमती बेसेंट के अनुयायी थे। ये नेता 'यंग इंडिया' नाम का एक अंग्रेज़ी पत्रिका भी निकालते थे। ये पत्रिका सप्ताह में एक बार निकाली जाती थी।

शंकर लाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास तीनों नेता गांधीजी को बहुत मानते थे और उनके सत्याग्रह-आंदोलन में मुंबई के बेजोड़ नेता भी थे। जो पूरे आंदोलन के दौरान गांधीजी के साथ ही रहे। इन्होंने गांधीजी से विनती की कि वे 'यंग इंडिया' के संपादक बन जाएँ। गांधीजी को तो इसकी सख्त ज़रूरत थी ही। उन्होंने विनती तुरंत स्वीकार कर ली।

लेखक कहता है कि गांधीजी का काम इतना बढ़ गया कि साप्ताहिक पत्र भी कम पड़ने लगा। लेखक कहता है कि गांधीजी और महादेव का सारा समय देश घूमने में बीतने लगा। गांधीजी और महादेव जहाँ भी होते, वहाँ से कामों और कार्यक्रमों की भारी भीड़ के बीच भी समय निकालकर लेख लिखते और

भेजते थे। लेखक कहता है
कि, भरपूर चैकसाई, ऊँचे-से-ऊँचे ब्रिटिश समाचार-पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी-पूरी सत्यनिष्ठा में से उत्पन्न होने वाली विनय-विवेक-युक्त विवाद करने की गांधीजी की शिक्षा इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश-विदेश के सारे समाचार-पत्रों की दुनिया में और एंग्लो-इंडियन समाचार-पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव को सबका लाड़ला बना दिया था।
क्योंकि महादेव ने सभी कामों को बड़े सही ढंग से सम्भाल रखा था।
लेखक कहता है कि भारत में महदेव के अक्षरों का कोई सानी नहीं था, कोई भी महादेव की तरह सुन्दर लिखावट में नहीं लिख सकता था। यहाँ तक कि वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।
भले ही उन दिनों भारत पर ब्रिटिश सल्तनत की पूरी हुकूमत थी, लेकिन उस सल्तनत के 'छोटे' बादशाह को भी गाँधीजी के सेक्रेटरी यानि महादेव के समान सुन्दर अक्षर लिखने वाला लेखक कहाँ मिलता था? बड़े-बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी मिलता नहीं था। लेखक कहता है कि महादेव का शुद्ध और सुंदर लेखन पढ़ने वाले को मंत्र मुग्ध कर देता था।
लेखक कहता है कि महादेव एक कोने में बैठे-बैठे अपनी लम्बी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे। मुलाकात के लिए आए हुए लोग अपनी मंज़िल पर जाकर सारी बातचीत को टाइप करके जब उसे गाँधीजी के पास 'ओके' करवाने के लिए पहुँचते, तो भले ही उनमें कुछ भूलें या कमियाँ-ख़ामियाँ मिल जाएँ, लेकिन महादेव की डायरी में या नोट-बही में कोई भी गलती नहीं होती थी यहाँ तक कि कॉमा मात्र की भी भूल नहीं मिलती थी।
लेखक कहता है कि गाँधीजी हमेशा मुलाकात के लिए आए हुए लोगों से कहते थे कि उन्हें अपना लेख तैयार करने से पहले महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था, इतना सुनते ही लोग दाँतों अँगुली दबाकर रह जाते थे। लेखक कहता है कि जिस तरह बिहार और उत्तर प्रदेश के हजारों मील लंबे मैदान गंगा, यमुना और दूसरी नदियों के परम उपकारी, सोने की कीमत वाले कीचड़ के बने हैं। यदि कोई इन मैदानों के किनारे सौ-सौ कोस भी चल लेगा तो भी रास्ते में सुपारी फोड़ने लायक एक पत्थर भी कहीं नहीं मिलेगा। इसी तरह महादेव के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को ठेस या ठोकर की बात तो दूर रही, खुरदरी मिट्टी या कंकरी भी कभी नहीं चुभती थी, यह उनके कोमल स्वभाव का ही परिणाम था। लेखक कहता है कि उनका यह स्वच्छ स्वभाव उनके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को चन्द्रमा और शुक्र की चमक की तरह मानो दूध से नहला देती थी।
लेखक कहता है कि उनके स्वाभाव में डूबने वाले के मन से उनकी इस मोहिनी का नशा कई-कई दिन तक नहीं उतरता था। महादेव का पूरा जीवन और उनके सारे कामकाज गांधीजी के साथ इस तरह से मिल गए थे कि गांधीजी से अलग करके अकेले उनकी कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। लेखक

कहता है कि सन् 1934-35 में गांधीजी वर्धा के महिला आश्रम में और मगनवाड़ी में रहने के बाद अचानक मगनवाड़ी से चलकर सेगाँव की सरहद पर लगे एक पेड़ के नीचे जा बैठे।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1 - आकाश के तारों में सबसे अनोखा तारा किसे कहा गया है?

(A) मंगल

(B) शुक्र

(C) चन्द्रमा

(D) ध्रुव

प्रश्न 2 - शुक्र तारे को किस का साथी माना गया है?

(A) मंगल

(B) सूर्य

(C) चन्द्रमा

(D) सांय काल का

प्रश्न 3 - शुक्र तारे की तरह चमकदार किसे कहा गया है?

(A) महादेव को

(B) गांधीजी को

(C) लेखक को

(D) इनमें से किसी को नहीं

प्रश्न 4 - मित्रों के बीच मज़ाक में अपने को गांधीजी का कुली कहने में और कभी-कभी अपना परिचय उनके खाना पकाने वाले, मशक से पानी ढोने वाले व्यक्ति अथवा गधे के रूप में देने में भी वे गौरव का अनुभव किया करते थे।

(A) कुली

(B) खाना पकाने वाला

(C) मशक से पानी ढोने वाला व्यक्ति

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6 - 'क्रानिकल' के निडर अंग्रेज़ संपादक हार्नीमैन को सरकार ने देश-निकाले की सज़ा देकर इंग्लैंड क्यों भेज दिया?

(A) क्योंकि वे सुस्त थे

(B) अपना काम निष्ठा से नहीं करते थे

(C) निडरता से अपना कर्तव्य निभाते थे
(D) गद्दारी करते हुए पकड़े गए थे

प्रश्न 7 - गांधीजी की प्रतिदिन की गतिविधियों पर कौन नज़र बनाए रखते थे?
(A) महादेव
(B) शंकर लाल बैंकर
(C) लेखक
(D) उम्मर सोबानी

प्रश्न 8 - महादेव के घनिष्ट मित्र कौन थे?
(A) लेखक
(B) गांधीजी
(C) सम्पादक
(D) नरहरि भाई

प्रश्न 9 - नरहरि भाई और महादेव ने साथ-साथ किसकी पढ़ाई की थी?
(A) सम्पादकीय
(B) वकालत
(C) स्नाकोत्तर
(D) हिंदी-अनुवाद

प्रश्न 10 - महादेव का किस चीज़ में कोई मुकाबला नहीं कर सकता था?
(A) बोलने में
(B) काम करने में
(C) लिखावट में
(D) चलने में

*-प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?
उत्तर-महादेव भाई अपना परिचय गाँधी जी के 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देते थे।
प्रश्न 2.'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?
उत्तर-अंग्रेजी संपादक हार्नीमैन 'यंग इंडिया' के लिए लिखते थे, जिन्हें देश निकाले की सजा देकर इंग्लैंड भेज दिया था। इस कारण 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी रहने लगी।
प्रश्न 3.गांधी जी ने 'यंग इंडिया' प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया?
उत्तर-गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' को सप्ताह में दो बार प्रकाशित करने का निश्चय किया।

प्रश्न 4.गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे?
उत्तर-गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई भारत सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे।
प्रश्न 5.महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?
उत्तर-महादेव भाई के झोलों में ताजी राजनीतिक घटनाओं, जानकारियों, चर्चाओं से संबंधित पुस्तकें, समाचार पत्र, मासिक पत्र आदि भरे रहते थे।
प्रश्न 6.महादेव भाई ने गांधी जी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था?
उत्तर-महादेव भाई ने गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया।
प्रश्न 7.अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक निकलते थे?
उत्तर-अहमदाबाद से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र थे-'यंग इंडिया' तथा 'नव जीवन'।
प्रश्न 8.महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे?
उत्तर-महादेव भाई लगातार चलने वाली यात्राओं, मुलाकातों, चर्चाओं और बातीचत में अपना समय बिताते थे। इस प्रकार वे 18-20 घंटे तक काम करते थे।
प्रश्न 9.महादेव भाई से गांधी जी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?
उत्तर-महादेव भाई से गाँधी जी की निकटता इस बात से सिद्ध होती है कि वे बाद के सालों में प्यारेलाल को बुलाते हुए 'महादेव' पुकार बैठते थे।
(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-
प्रश्न 1.गांधी जी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?
उत्तर-महादेव भाई 1917 में गांधी के पास पहुँचे। गांधी जी ने उनको पहचानकर उन्हें उत्तराधिकारी का पद सौंपा था। 1919 में जलियाँबाग कांड के समय जब गांधी जी पंजाब जा रहे थे तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उसी समय महादेव भाई। को अपना वारिस कहा था।
प्रश्न 2.गांधी जी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?
उत्तर-महादेव भाई पहले उनकी समस्याओं को सुनते थे। उनकी संक्षिप्त टिप्पणी तैयार करके गाँधी जी के सामने पेश । करते थे तथा उनसे लोगों की मुलाकात करवाते थे।
प्रश्न 3.महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?
उत्तर-महादेव भाई ने गांधी जी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी के अलावा 'सत्य के प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद किया। इसके अलावा 'चित्रांगदा', 'विदाई का अभिशाप', 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि का अनुवाद उनकी साहित्यिक देन है।
प्रश्न 4.महादेव, भाई की अकाल मृत्यु को कारण क्या था?
उत्तर-महादेव भाई की अकाल मृत्यु को कारण उनकी व्यस्तता तथा विवशता थी। सुबह से शाम तक काम करना और गरमी की ऋतु में ग्यारह मील पैदल चलना ही उनकी मौत का कारण बने।
प्रश्न 5.महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधी जी क्या कहते थे?
उत्तर-महादेव भाई के द्वारा लिखित नोट बहुत ही सुंदर और इतने शुद्ध होते थे कि उनमें कॉमी और मात्रा

की भूल और छोटी गलती भी नहीं होती थी। गांधी जी दूसरों से कहते कि अपने नोट महादेव भाई के लिखे नोट से ज़रूर मिला लेना।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?

उत्तर-पंजाब में फ़ौजी शासन ने काफी आतंक मचाया। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार किया गया। उन्हें उम्र कैद की सज़ा देकर काला पानी भेज दिया गया। 1919 में जलियाँवाला बाग में सैकड़ों निर्दोष लोगों को गोलियों से भून दिया गया। 'ट्रिब्यून' के संपादक श्री कालीनाथ राय को 10 साल की जेल की सज़ा दी गई।

प्रश्न 2.महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाडला बना दिया था?

उत्तर-महादेव भाई गांधी जी के लिए पुत्र के समान थे। वे गांधी का हर काम करने में रुचि लेते थे। गांधी जी के साथ देश भ्रमण तथा विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लेते थे। वे गांधी जी की गतिविधियों पर टिप्पणी करते थे। महादेव जी की लिखावट बहुत सुंदर, स्पष्ट थी। वे इतना शुद्ध लिखते थे कि उसमें मात्रा और कॉमा की भी अशुधि नहीं होती थी। वे पत्रों का जवाब जितनी शिष्टता से देते थे, उतनी ही विनम्रता से लोगों से मिलते थे। वे विरोधियों के साथ भी उदार व्यवहार करते थे। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें सभी का लाडला बना दिया।

प्रश्न 3.महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर-पूर्णतः शुद्ध और सुंदर लेख लिखने में महादेव भाई का भारत भर में कोई सानी नहीं था। वे तेज़ गति से लंबी लिखाई कर सकते थे। उनकी लिखावट में कोई भी गलती नहीं होती थी। लोग टाइप करके लाई 'रचनाओं को महादेव की रचनाओं से मिलाकर देखते थे। उनके लिखे लेख, टिप्पणियाँ, पत्र और गाँधीजी के व्याख्यान सबके सब ज्यों-के-ज्यों प्रकाशित । होते थे।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.'अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।'

उत्तर-आशय-महादेव भाई गांधी जी के निजी सचिव और निकटतम सहयोगी थे। इसके बाद भी उन्हें अभिमान छू तक न गया था। वे गांधी जी के प्रत्येक काम को करने के लिए तैयार रहते थे। वे गांधी जी की प्रत्येक गतिविधि, उनके भोजन और दैनिक कार्यों में सदैव साथ देते थे। वे स्वयं को गांधी का सलाहकार, उनका रसोइया, मसक से पानी ढोने वाला तथा बिना विरोध के गधे के समान काम करने वाला मानते थे।

प्रश्न 2.इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफ़द को स्याह करना होता था।

उत्तर-महादेव ने गाँधी जी के सान्निध्य में आने से पहले वकालत का काम किया था। इस काम में वकीलों को अपना केस जीतने के लिए सच को झूठ और झूठे को सच बताना पड़ता है। इसलिए कहा गया है कि इस पेशे में स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करना होता था।

प्रश्न 3.देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

उत्तरआशय- नक्षत्र मंडल में करोड़ों तारों के मध्य शुक्रतारा अपनी आभा-प्रभा से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, भले ही उसका चमक अल्पकाल के लिए हो। यही हाल महादेव भाई देसाई का था। उन्होंने अपने मिलनसार स्वभाव, मृदुभाषिता, अहंकार रहित विनम्र स्वभाव, शुद्ध एवं सुंदर लिखावट तथा लेखक की मनोहारी शैली से सभी का दिल जीत लिया था। अपनी असमय मृत्यु के कारण वे कार्य-व्यवहार से अपनी चमक बिखेर कर अस्त हो गए।

प्रश्न 4.उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

उत्तर-महादेव इतनी शुद्ध और सुंदर भाषा में पत्र लिखते थे कि देखने वालों के मुँह से वाह निकल जाती थी। गाँधी जी के पत्रों का लेखन महादेव करते थे। वे पत्र जब दिल्ली व शिमला में बैठे वाइसराय के पास जाते थे तो वे उनकी सुंदर लिखावट देखकर दंग रह जाते थे।

व्याकरण भाग :-

1-विराम चिन्ह:-

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न

(1) अल्प विराम)Comma)(,)

(2) अर्द्ध विराम)Semi colon) (;)

(3) पूर्ण विराम)Full-Stop) (। (

(4) उप विराम)Colon) [:]

(5) विस्मयादिबोधक चिह्न)Sign of Interjection)(!)

(6) प्रश्नवाचक चिह्न)Question mark) (?)

(7) कोष्ठक)Bracket) (())

(8) योजक चिह्न)Hyphen) (-)

(9) अवतरण चिह्न या उद्धरणचिह्न)Inverted Comma) ("... ")

(10) लाघव चिह्न)Abbreviation sign) (o)

(11) आदेश चिह्न)Sign of following) (:-)

(12) रेखांकन चिह्न)Underline) (_)

(13) लोप चिह्न)Mark of Omission)(...)

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दोबारा लिखिए|

1. लोगों ने मिस्टर शर्मा को एम पी चुन लिया
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
3. क्या प्रधानाचार्य आज नहीं आए हैं
4. तुलसी ने रामचरित मानस में लिखा है परहित सरसि धर्म नहिं भाई
5. तुम कौन हो कहाँ रहते हो क्या करते हो यह सब मैं क्यों पूछू
6. बूढे ने डॉक्टर चड्ढा से कहा इसे एक नज़र देख लीजिए शायद बच जाए
7. कामायनी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे कई महान कवि आए थे
9. वसंत ऋतु के त्योहार होली वसंत पंचमी वैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं
10. हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी
11. क्या कहा तुम अनुत्तीर्ण हो गए
12. रोहन 125 राजौरी गार्डन दिल्ली में रहता है
13. यह पत्र 25 जुलाई 2014 को लिखा गया है

उत्तर-

1. लोगों ने मि. शर्मा को एम.पी. चुन लिया है।
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा, “तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।
3. “क्या आज प्रधानाचार्य नहीं आए हैं?”
4. तुलसी ने ‘रामचरित मानस’ में लिखा है-‘परहित सरसि धर्म नहिं भाई’।
5. तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, यह सब मैं क्यों पूछू ?
6. बूढे ने डॉ. चड्ढा से कहा, “इसे एक नज़र देख लीजिए, शायद बच जाए।
7. ‘कामायनी’ कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है।
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह ‘दिनकर’, सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ जैसे कई महान कवि आए थे।
9. वसंत ऋतु के त्योहार (होली, वसंत पंचमी, बैसाखी) हमें उल्लास से भर जाते हैं।
10. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
11. क्या कहा, तुम अनुत्तीर्ण हो गए!
12. रोहन 125, राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहता है।
13. यह पत्र 25 जुलाई, 2014 को लिखा गया है।

*-निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दुबारा लिखिए

1-हिंदी कविता की सुंदर पंक्ति है जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए

2-नीचे को धूरि समान वेद वाक्य नहीं है

3-धूल धूलि धूली धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग अलग हैं

4-एक आदमी ने घृणा से कहा क्या ज़माना है जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान

लगा के बैठी है

5-दूसरे साहब कह रहे थे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है

6-कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है हाय रे पत्थर-दिल

7-कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं

8-नहीं मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया

9-तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेद्री

10-साउथ कोल पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह के नाम से प्रसिद्ध है

11-चलो चलते हैं मैंने कहा

12-गांधी जी कहते थे-महादेव के लिखे नोट के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न

13-रामन ने बी ए और एम ए दोनों ही परीक्षाओं में काफी ऊँचे अंक हासिल किए

14-यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं

संधि की परिभाषा:-

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

सरल शब्दों में- दो शब्दों या शब्दांशों के मिलने से नया शब्द बनने पर उनके निकटवर्ती वर्णों में होने वाले परिवर्तन या विकार को संधि कहते हैं।

संधि के भेद:-

(1)स्वर संधि

(2)व्यंजन संधि

(3)विसर्ग संधि

(1)स्वर संधि- दो स्वरों से उत्पत्र विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, सूर्य + उदय = सूर्योदय, मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र,

कवि + ईश्वर = कवीश्वर, महा + ईश = महेश

इनके पाँच भेद होते है -

(i)दीर्घ संधि

(ii)गुण संधि

(iii)वृद्धि संधि

(iv)यण संधि

(v)अयादी संधि

(i)दीर्घ संधि-

जब दो सवर्ण, ह्रस्व या दीर्घ, स्वरों का मेल होता है तो वे दीर्घ सवर्ण स्वर बन जाते हैं। इसे दीर्घ स्वर-संधि कहते हैं।

अ + अ= आ	अत्र + अभाव= अत्राभाव कोण + अर्क= कोणार्क
अ + आ= आ	शिव + आलय= शिवालय भोजन + आलय= भोजनालय
आ + अ= आ	विद्या + अर्थी= विद्यार्थी लज्जा + अभाव= लज्जाभाव
आ + आ= आ	विद्या + आलय= विद्यालय महा + आशय= महाशय
इ + इ= ई	गिरि + इन्द्र= गिरीन्द्र
इ + ई= ई	गिरि + ईश= गिरीश
ई + इ= ई	मही + इन्द्र= महीन्द्र
ई + ई= ई	पृथ्वी + ईश= पृथ्वीश
उ + उ= ऊ	भानु + उदय= भानूदय
ऊ + उ= ऊ	स्वयम्भू + उदय= स्वयम्भूदय
ऋ + ऋ= ऋ	पितृ + ऋण= पितृण

(ii) गुण संधि- अ, आ के साथ इ, ई का मेल होने पर 'ए'; उ, ऊ का मेल होने पर 'ओ'; तथा ऋ का मेल होने पर 'अर्' हो जाने का नाम गुण संधि है।

अ + इ= ए	देव + इन्द्र= देवन्द्र
अ + ई= ए	देव + ईश= देवेश
आ + इ= ए	महा + इन्द्र= महेन्द्र
अ + उ= ओ	चन्द्र + उदय= चन्द्रोदय
अ + ऊ= ओ	समुद्र + ऊर्मि= समुद्रोर्मि
आ + उ= ओ	महा + उत्स्व= महोत्स्व
आ + ऊ= ओ	गंगा + ऊर्मि= गंगोर्मि
अ + ऋ= अर्	देव + ऋषि= देवर्षि

(iii) वृद्धि संधि- अ, आ का मेल ए, ऐ के साथ होने से 'ऐ' तथा ओ, औ के साथ होने से 'औ' में परिवर्तन को वृद्धि संधि कहते हैं।
जैसे-

अ + ए =ऐ	एक + एक =एकैक
अ + ऐ =ऐ	नव + ऐश्वर्य =नवैश्वर्य
आ + ए=ऐ	महा + ऐश्वर्य=महैश्वर्य सदा + एव =सदैव
अ + ओ =औ	परम + ओजस्वी =परमौजस्वी वन + ओषधि =वनौषधि
अ + औ =औ	परम + औषध =परमौषध
आ + ओ =औ	महा + ओजस्वी =महौजस्वी
आ + औ =औ	महा + औषध =महौषध

(iv) यण संधि- इ, ई, उ, ऊ या ऋ का मेल यदि असमान स्वर से होता है तो इ, ई को 'य'; उ, ऊ को 'व' और ऋ को 'र' हो जाता है। इसे यण संधि कहते हैं।
जैसे-

(क) इ + अ= य	यदि + अपि= यद्यपि

इ + आ= या	अति + आवश्यक= अत्यावश्यक
इ + उ= यु	अति + उत्तम= अत्युत्तम
इ + ऊ = यू	अति + उष्म= अत्यूष्म
(ख) उ + अ= व	अनु + आय= अन्वय
उ + आ= वा	मधु + आलय= मध्वालय
उ + ओ = वो	गुरु + ओदन= गुवौंदन
उ + औ= वौ	गुरु + औदार्य= गुवौंदार्य
उ + इ= वि	अनु + इत= अन्वित
उ + ए= वे	अनु + एषण= अन्वेषण
(ग) ऋ + आ= रा	पितृ + आदेश= पित्रादेश

(v) अयादि स्वर संधि- ए, ऐ तथा ओ, औ का मेल किसी अन्य स्वर के साथ होने से क्रमशः अय्, आय् तथा अव्, आव् होने को अयादि संधि कहते हैं।
जैसे-

ए + अ= य	ने + अन= नयन
ऐ + अ= य	गै + अक= गायक
ओ + अ= व	भो + अन= भवन
औ + उ= वु	भौ + उक= भावुक

(2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants) :- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पत्र विकार को व्यंजन संधि कहते है।
दूसरे शब्दों में- एक व्यंजन के दूसरे व्यंजन या स्वर से मेल को व्यंजन-संधि कहते हैं।
कुछ नियम इस प्रकार हैं-
(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।
जैसे- अहम् + कार =अहंकार
पम् + चम =पंचम
सम् + गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते है और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है।

जैसे- उत् + लास =उल्लास

महान् + लाभ =महांल्लाभ

(3) किसी वर्ग के पहले वर्ण ('क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प') का मेल किसी स्वर या वर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण या र ल व में से किसी वर्ण से हो तो वर्ण का पहला वर्ण स्वयं ही तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

दिक् + गज =दिग्गज (वर्ग के तीसरे वर्ण से संधि)

षट् + आनन =षडानन (किसी स्वर से संधि)

षट् + रिपु =षड्रिपु (र से संधि)

अन्य उदाहरण

जगत् + ईश =जगतदीश

तत् + अनुसार =तदनुसार

वाक् + दान =वाग्दान

दिक् + दर्शन =दिग्दर्शन

वाक् + जाल =वगजाल

अप् + इन्धन =अबिन्धन

तत् + रूप =तद्रूप

(4) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद 'न' या 'म' आये, तो क्, च्, ट्, त्, प, अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे-

वाक्+मय =वाङ्मय

अप् +मय =अम्मय

षट्+मार्ग =षणमार्ग

जगत् +नाथ=जगन्नाथ

उत् +नति =उन्नति

षट् +मास =षण्मास

5) सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के योग में शकार और चवर्ग तथा षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग हो जाता है। जैसे-

स्श+	रामस् रामश्शेते= शेते+
त्च+	सत् सच्चित्= चित्+
त्छ+	महत् महच्छत्र= छात्र+
त् ण+	महत् महण्णकार= णकार+
ष्त+	द्रष् द्रष्टा= ता+
त्ट+	बृहत् बृहटिट्टिभ=टिट्टिभ+

(6) यदि वर्गों के अन्तिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये, तो 'ह' पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह्' के पूर्ववाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण।

जैसे-

उत्उद्धत= हत+

उत्उद्धार= हार+

वाक् वाग्घरि= हरि+

(7) स्वर के साथ छ का मेल होने पर छ के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।

जैसे-

परि परिच्छेद =छेद +

शाला शालाच्छादन =छादन +

आ आच्छादन =छादन +

(8) त् या द् का मेल च या छ से होने पर त् या द् के स्थान पर च् होता है; ज या झ से होने पर ज्; ट या ठ से होने पर ट्; ड या ढ से होने पर ड् और ल होने पर ल् होता है।

उदाहरण-

जगत् जगच्छाया= छाया +

उत् उच्चारण= चारण +

सत् सज्जन= जन +

तत् तल्लीन= लीन +

(9) त् का मेल किसी स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, र से होने पर त् के स्थान पर द् हो जाता है।

जैसे-

सत् सद= इच्छा +िच्छा

जगत् जगदीश= ईश +

तत् तद्रूप= रूप +

भगवत् भगवद् भक्ति= भक्ति +

(10) त् या द् का मेल श से होने पर त् या द् के स्थान पर च् और श के स्थान पर छ हो जाता है।

जैसे-

उत् उच्छवास= श्वास +

सत् सच्छास्त्र= शास्त्र +

(11) त् या द् का मेल ह से होने पर त् या द् के स्थान पर द् और ह से स्थान पर ध हो जाता है।

जैसे-

पद् पद्धति= हति +

उत् उद्धार= हार +

(12) म् का क से म तक किसी वर्ण से मेल होने पर म् के स्थान पर उस वर्ण वाले वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाएगा।

जैसे-

सम् सन्तुष्ट= तुष्ट +

सम् संयोग= योग +

(3)विसर्ग संधि)Combination Of Visarga) :- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

दूसरे शब्दों में- स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- विसर्ग के साथ (:)जब किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तो उसे विसर्गसंधि कहते हैं।-

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

जैसे-

मनः मनोरथ= रथ +

सरः सरोज= ज +

मनः मनोभाव= भाव +

पयः पयोद= द +

मनः मनोविकार = विकार +

पयः पयोधर= धर +

मनः मनोहर= हर +

वयः वयोवृद्ध= वृद्ध +

यशः यशोधरा= धरा +

सरः सरोवर= वर +

तेजः तेजोमय= मय +

यशः यशोदा= दा +

पुरः पुरोहित= हित +

मनः मनोयोग= योग +

(2) यदि विसर्ग के पहले इ या उ आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है।

जैसे-

निः निष्कपट= कपट +

निः निष्फल= फल +

निः निष्पाप= पाप +

दुः दुष्कर= कर +

(3) विसर्ग से पूर्व अ, आ तथा बाद में क, ख या प, फ हो तो कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे-

प्रातः प्रातःकाल =काल +

पयः पयःपान =पान +

अन्तः अन्तःकरण =करण +

अंतः अंतःपुर =पुर +

(4) यदि 'इ' - 'उ' के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र' आये, तो 'इ' - 'उ' का 'ई' - 'ऊ' हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है।

जैसे-

निः नीरव= रव +

निः नीरस= रस +

निः नीरोग= रोग +

दुः दूराज= राज +

(5) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान में 'र्' हो जाता है। जैसे-

निः निरुपाय= उपाय +

निः निर्झर= झर +

निः निर्जल= जल +

निः निर्धन= धन +

दुः दुर्गन्ध= गन्ध +

निः निर्गुण= गुण +

निः निर्विकार= विकार +

दुः दुरात्मा= आत्मा +

दुः दुर्नीति= नीति +

निः निर्मल= मल +

(6) यदि विसर्ग के बाद 'चश-छ-' हो तो विसर्ग का 'श्', 'टष-ठ-' हो तो 'ष्' और 'तस-थ-' हो तो 'स्' हो जाता है।

जैसे-

निः निश्चय=चय +

निः निश्छल= छल +

निः निस्तार= तार +

निः निस्सार= सार +

निः निश्शेष= शेष +

निः निष्ष्ठीव= ष्ठीव +

(7) यदि विसर्ग के आगे पीछे-'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है और विसर्ग के बादवाले 'अ' का लोप होता है तथा उसके स्थान पर लुप्ताकार का चिह्न लगा दिया जाता है। (ऽ)

जैसे-

प्रथमः प्रथमोऽध्याय= अध्याय +

मनः मनोऽभिलषित= अभिलषित +

यशः यशोऽभिलाषी =अभिलाषी +

(8) विसर्ग से पहले आ को छोड़कर किसी अन्य स्वर के होने पर और विसर्ग के बाद र रहने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है और यदि उससे पहले ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है।

जैसे-

निनीरस= रस + :

निनीरोग= रोग + :

(9) विसर्ग के बाद श, ष, स होने पर या तो विसर्ग यथावत् रहता है या अपने से आगे वाला वर्ण हो जाता है।

जैसे-

निनिःसंदेह अथवा निस्संदेह= संदेह + :

निनिःसहाय अथवा निस्सहाय= सहाय + :

शुद्ध-अशुद्ध वर्तनी :-

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अर्पण	अरपन	अनभिज्ञ	अनभिग्य
आहार	अहार	अस्वीकार	अश्वीकार
अपराह्न	अपरान्ह	अभिषेक	अभिसेक
अनुगृहीत	अनुग्रहीत	अधीन	आधीन
अंतःकथा	अंतर्कथा	अनधिकार	अनाधिकार
अनुसरण	अनुशरण	आशीर्वाद	आर्शीवाद
अमावस्या	अमावश्या	अपह्नुति	अपन्हुति
अध्ययन	अध्यन	आर्द्र	आद्र
आतिथेय	आतिथे	आकांक्षा	अकांक्षा
अट्टालिका	आट्टालिका	आधिक्य	आधिक्यता
आवश्यक	अवश्यक	आच्छादन	आक्षादन
आध्यात्मिक	अध्यात्मिक	आजीविका	अजीविका
अद्वितीय	अदितीय	आमिष	अमिस

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आराधना	अराधना	आशा	आसा
आषाढ़	असाढ़	श्मशान	श्यमशान
उज्ज्वल	उज्जवल	उल्लंघन	उलंघन
उत्पात	उतपात	उन्नति	उन्नती
उन्मीलित	उन्मिलित	ऊपर	उपर
ऐक्य	ऐक्यता	ऐश्वर्य	एश्वर्य
कुंअर	कुंवर	कौशल्या	कौसल्या
कृतकृत्य	कृत्यकृत्य	कृतघ्न	कृतघ्नी
करोड़	करोड	केन्द्रीकरण	केन्द्रीयकरण
क्यारी	कियारी	कृपा	क्रिपा
कीर्ति	कीर्ती	कृपया	कृप्या
कवयित्री	कवियित्री	कालिदास	कालीदास
कर्त्तव्य-पालन	कर्त्तव्यपालन	ईर्ष्या	ईर्षा
गायकी	गायिकी	गृहणी	ग्रहणी
गायें	गौवें	गरुड़	गरुण
गरिष्ठ	गरिष्ट	गृहस्थ	ग्रहस्थ
गर्मी	गरमी	चंचल	चन्चल
क्षत्रिय	क्षत्रीत	क्षमा	छमा
क्षेम	छेम	ज्योत्स्ना	ज्योत्सना
जामाता	जमाता	जागृति	जाग्रति

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
जगज्जननी	जगत जननी	तालाब	तलाब
त्याज्य	त्यज्य	तरुच्छाया	तरुछाया
तात्कालिक	तत्कालिक	त्रिकाल	तृकाल
तलाशी	तलासी	त्रिगुण	त्रगुन
तिलांजलि	तिलांजली	दरिद्रता	दारिद्रता
दाँत	दांत	देशनिकाला	देश-निकाला
दयालु	दयालू	दुरवस्था	दुरावस्था
द्रष्टव्य	दृष्टव्य	दृश्य	दृष्य
दोष	दोश	दृग	द्रग
धनुष	धनुश	निवारण	निवारन
निर्वाण	निरवान	निश्चेष्ट	निश्चेष्ठ
नारायण	नरायन	नवाब	नबाब
निरपराध	निरापराध	नाराज	नराज
नारी	नारि	निरोग	निरोग्य
पतित	पतीत	पुष्पावली	पुष्पावलि
प्रेयसी	प्रेयसि	प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
प्रतिज्ञा	प्रतीज्ञा	प्रसन्न	प्रशन्न
पुरस्कार	पुरुस्कार	पोषक	पोसक
पद्मिनी	पदमिनी	परिच्छेद	परिछेद
पृष्ठ	पृष्ट	पयःपान	पयापन

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
पितृभक्ति	पिताभक्ति	पैतृक	पैत्रिक
पौरुष	पौरुश	परिषद	परिसद
पुल्लिंग	पुलिंग	पिशाची	पिशाचिनी
प्रादेशिक	प्रदेशिक	प्राप्ति	प्राप्ती
प्रामाणिक	प्रमाणिक	प्रणाम	प्रनाम
प्रज्वलित	प्रज्ज्वलित	प्रतिच्छाया	प्रतिछाया
प्रशंसा	प्रसंसा	वृक्ष	बृक्ष
विराजमान	विराज्यमान	वाल्मीकि	वाल्मीकी
विरहिणी	विरहणी	वाहिनी	वाहनी
विधि	विधी	व्याप्त	व्यापित
बहुलता	बहुल्यता	विश्लेषण	विस्लेषण
बहिष्कार	बाहिष्कार	विशेष	विशेस
भस्मीभूत	भस्मिभूत	भवसागर	भौसागर
माहात्म्य	महात्म	मृत्युञ्जय	मृत्युन्जय
माननीय	मान्यनीय	मनोज्ञ	मनोग्य
मेहनत	मेनहत	मंत्रिमंडल	मंत्रीमंडल
मिट्टी	मट्टी	महायज्ञ	महाज्ञ
योद्धा	योधा	यश	यस
यशोलाभ	यशलाभ	यशस्वी	यसस्वी
राजनीतिक	राजनैतिक	राजगण	राजागण

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऋतु	ऋतू	राजर्षि	राजऋषि
ऋण	रिण	विरहिणी	विरहणी
विस्मृत	विसमृत	विदेह	वीदेह
विकास	विकाश	विषम	विसम
वेश	वेष	व्यावहारिक	व्यवहारिक
शिरःपीड़ा	शिरोपीड़ा	शशि	शशी
शताब्दी	शताब्दि	शान्तिमय	शांतमय
साप्ताहिक	सप्ताहिक	संन्यास	सन्यास
स्वास्थ्य	स्वस्थ	साम्य	साम्यता
सम्मुख	सन्मुख	संगृहीत	संग्रहीत
सर्वस्व	सर्वश्व	हृतबुद्धि	हृतोबुद्धि
हिरण्यकशिपु	हिरण्यकश्यप	ऋषिकेश	ऋषीकेश
स्थिति	स्थिती	सत्वगुण	सतीगुण
समीक्षा	समिक्षा	स्थायी	स्थाई
सहिष्णु	सहीष्णु	संवाद	सम्वाद
सुन्दरता	सौंदर्यता	संवारना	सवारना
साम्राज्य	सम्राज्य	सौजन्य	सौजन्यता
स्वावलम्बन	स्वालम्बन	सम्मान	सन्मान
युधिष्ठिर	युधिष्ठर	द्वारका	द्वारिका
तदनन्तर	तदान्तर	ब्रज	बृज

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
विशिष्ट	विशिष्ठ	निष्कपट	निष्कपटी
निरपराध	निरपराधी	ऊर्ध्व	उर्ध्व
गृहीत	ग्रहीत	प्रथा	पृथा
द्रष्टा	दृष्टा	जाग्रत	जागृत
अनूदित	अनुदित	शुश्रुषा	सुश्रूषा
एषणा	ऐषणा	ऐकान्तिक	एकांतिक
अन्त्याक्षरी	अंताक्षरी	पारलौकिक	परलौकिक
मालिन	मालन	अहल्या	अहिल्या
नीरसता	निरसता	संग्रहीत	संगृहीत
निर्दय	निर्दयी	अनुग्रह	अनुगृह
अनधिकृत	अनाधिकृत	भागीरथी	भगीरथ
आजीविका	अजीविका	कुमुदिनी	कुमुदनी
पटाक्षेप	पटाच्छेप	सौन्दर्य	सौंदर्यत्व
आह्वान	आहवान	असाम्य	असाम्यता
उच्छृंखला	उश्रृंखला	यथेष्ट	यथेष्ठ
बहिरंग	वाहिरंग	सृजन	सर्जन
गरिष्ठ	गरिष्ट	अन्तर्धान	अंतर्ध्यान
परिच्छेद	परिछेद	तन्मय	तत्मय
परमौषधि	परमोषधि	मनःकामना	मनोकामना
यशोलाभ	यशलाभ	रीत्यनुसार	रीत्यानुसार

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
उद्विग्न	उदिग्न	अधोगति	अधगति
नदीश	नदेश	दिग्जाल	दिगजाल
पुनरभिनय	पुनराभिनय	मनःकष्ट	मनोकष्ट
इतःपूर्व	इतिपूर्व	निरुपम	निरोपम
अक्षौहिणी	अक्षोहिणी	मतैक्य	मतेक्य
सद्गति	सत्गति	स्वयंवर	स्वयम्वर
अत्युक्ति	अत्योक्ति	मनोज्ञ	मनज्ञ
जगन्नाथ	जगतनाथ	मनोहर	मनहर
दुस्तर	दुष्तर	दिवरात्र	दिवारात्रि
दुरात्मगण	दुरात्मागण	सानन्द	सानन्दित
गुणिगण	गुणीगण	भ्रातृगण	भ्रातागण
योगिवर	योगीवर	सत्वगण	सतोगण
प्राणिवृंद	प्रणीवृन्द	मंत्रिवर	मंत्रीवर
सलज्ज	सलज्जित	अहिर्निश	अहर्निश
सशंक	सशंकित	आत्मपुरुष	आत्मापुरुष
चारुता	चारुताई	अनभल	अभल
द्विवार्षिक	द्वैवार्षिक	प्रफुल्ल	प्रफुल्लित
ज्ञानवान	ज्ञानमान	आग्नेय	अग्नेय
अनावासिक	अनवासिक	आनुषंगिक	अनुषांगिक
भुजंगी	भुजंगिनी	कृशांगी	कृशांगिनी

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
प्रेयसी	प्रेयसि	सुलोचना	सुलोचनी
कोमलांगी	कोमलांगिनी	चातकी	चातकनी
अकस्मात्	अकस्मात	राजन्	राजन
सतत्	सतत	विद्वान्	विद्वान
शृंगार	सिंगार	केंद्रीय	केंद्रिय
इकट्ठा	इकठ्ठा	इच्छा	ईच्छा
इंग्लैंड	इंगलेंड	इंजेक्शन	इंजैक्शन
ईजाद	इजाद	ईसाई	इसाई
ईमानदारी	इमानदारी	उद्घाटन	उदघाटन
उद्यत	उद्दत	उनतीस	उन्तीस
उपलक्ष्य	उपलक्ष	ऊहापोह	उहापोह
ऊधम	उधम	एकत्र	एकत्रित
एहसास	अहसास	एहतियात	ऐहतियात
ऐक्ट	एक्ट	ऐच्छिक	एच्छिक
ऐंकर	एंकर	कालिदास	कालीदास
कोटि	कोटी	कूवत	कूबत
कीजिए	करिये	क्योंकि	क्योकी
कागज़ात	कागजातों	कसौटी	कसोटी
कैबिनेट	केबिनेट	कारागृह	काराग्रह
झोंका	झोका	झोंपड़ी	झोपड़ी

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
टेलीविजन	टेलिविजन	टिप्पणी	टिपण्णी
ड्राइवर	ड्राईवर	ताबूत	ताबुत
तूफ़ान	तुफान	तत्त्व	तत्व
तात्कालिक	तत्कालिक	तृतीय	त्रितीय
त्रिकालदर्शी	तृकालदर्शी	तत्त्वावधान	तत्वाधान
तिनतरफा	तीनतफरा	तबीयत	तबियत
तिथि	तिथी	त्यौरी	त्योरी
त्योहार	त्यौहार	तिलिस्म	तिलस्म
तुष्टीकरण	तुष्टिकरण	थर्माकोल	थरमाकोल
थीसीस	थीसिस	दरियाई	दरियायी
द्वंद्व	द्वन्द	दंपति/दंपती	दंपत्ति
दीपावली	दिवाली	दयालु	दयालू
दायित्व	दायित्त्व	दुरवस्था	दुरावस्था
दुरुपयोग	दुरूपयोग	परिप्रेक्ष्य	परिपेक्ष्य
पुनर्वास	पुर्नवास	पड़ोस	पड़ौस
प्रदर्शन	प्रर्दशन	प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
पुनर्जन्म	पुर्नजन्म	फुट	फिट
फ़जूल	बेफ़ज़ूल	बाबत	बावत
बीमार	बिमार	बरदाश्त	बर्दाश्त/बर्दास्त
बादाम	बदाम	ब्राह्मण	ब्रह्मण

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
बजाय	बजाए	बहू	बहु
बाज़ार	बजार	बांग्ला	बंगला
बाक़ायदा	बकायदा	बिस्वा	बिसवा
बल्ब	बल्व	बीवी	बीबी
बेचना	बेंचना	भगवत्प्रेम	भागवत्प्रेम
भुखमरी	भूखमरी	भौंक	भोंक
भास्कर	भाष्कर	भेड़	भेंड़
महत्त्व	महत्व	मालूम	मालुम
शांति	शान्ती	शिशु	शिशू
शशिकांत	शशीकांत	शंभु	शंभू
श्मशान	शमशान	शिविर	सिविर
शांतिमय	शांतमय	शय्या	शैया
श्रीमती	श्रीमति	षड्यंत्र	षड़यंत्र
स्थिति	स्थिती	स्थायी	स्थाई
सुमेरु	सुमेरू	संवर्धन/संवर्द्धन	संवर्दन
सूची	सूचि	सामान	समान
संपत्ति	संपत्ती	साप्ताहिक	सप्ताहिक
सांसारिक	संसारिक	सिंहवाहिनी	सिंहवाहनी
साधु	साधू	स्वास्थ्य	स्वास्थ
साइकिल	सायकिल	सौंदर्य	सौंदर्यता

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
स्वावलंबी	स्वालंबी	सामर्थ्य	सामर्थ
सशक्तीकरण	सशक्तिकरण	स्वप्नद्रष्टा	स्वप्नदृष्टा
सदृश	सदृश्य	साइबर	साईबर
सिंकाई	सिकाई	सुचारु	सुचारू
सूबेदार	सुबेदार	सूचीबद्ध	सूचिबद्ध
संवाद	सम्वाद	समाधि	समाधी
उद्योगीकरण	औद्योगीकरण	आहुति	आहूती
वज़ीफा	बजीफा	रामचरितमानस	रामचरित मानस
धोबनी	धोबिन	बाल्मीकी	बाल्मीकि
व्यावसायिक	व्यवसायिक	श्वसुर	ससुर
हरिद्रा	हल्दी	माक्षण	माखन
क्लिष्ट	क्लिष्ठ	वाङ्मय	बांगमय
लघुउत्तरीय	लघुत्तरीय	गत्यवरोध	गत्यावरोध

शुद्ध-अशुद्ध -वाक्य :-

अशुद्ध – ये बक्सा बहुत भारी है।
शुद्ध – यह बक्सा बहुत भारी है।

अशुद्ध – इस वर्ष गेहूँ का फ़सल अच्छा हुआ।
शुद्ध – इस वर्ष गेहूँ की फ़सल अच्छी हुई।

अशुद्ध – पैंट सिल गया है, पर बटन नहीं टँका है ।
शुध्द – पैंट सिल गई है, पर बटन नहीं टँकें हैं।

अशुद्ध – आपके एक-एक शब्द प्रभावशाली होते।
शुध्द – आपका एक-एक शब्द प्रभावशाली होता ।

अशुद्ध –उसके अंग-अंग काट डाले गए।
शुद्ध – उसका अंग-अंग काट डाला गया।

अशुद्ध – गिरते ही उसका प्राण निकल गया।
शुद्ध – गिरते ही उसके प्राण निकल गए।

अशुद्ध – कक्षा में बीस बच्चा अवश्य होना चाहिए।
शुद्ध – कक्षा में बीस बच्चे अवश्य होने चाहिए।

अशुद्ध – घर पर सब कुशल हैं।
शुध्द – घर में सब कुशल हैं।

अशुद्ध – मैंने हँस दिया।
शुद्ध – मैं हँस दिया।

अशुद्ध – मेरा भाई कल को आएगा।
शुद्ध – मेरा भाई कल आएगा।

अशुद्ध – अच्छे व्यवहार को रखो।
शुध्द – अच्छा व्यवहार रखो।

अशुद्ध – यह पुस्तक अनंत का है।
शुद्ध – यह पुस्तक अनंत की है।

अशुद्ध – वह घर को जा रहा है।
शुद्ध – वह घर जा रहा है।

अशुद्ध – दरवाज़ा का बाईं ओर बरामदा है।
शुद्ध – दरवाज़े के बाईं ओर बरामदा है।

अशुद्ध – आप आए पर तुम बैठे नहीं।
शुद्ध – आप आए पर आप बैठे नहीं।

अशुद्ध – वह लोग कल आ जाएँगे।
शुद्ध – वे लोग कल आ जाएँगे।

अशुद्ध – तुम तुम्हारी किताब निकालो।
शुद्ध – तुम अपनी किताब निकालो।

अशुद्ध – मेरे को तेरे से जरूरी काम
शुद्ध – मुझे तुझसे ज़रूरी काम है।

अशुद्ध – इन सबों ने मेरी शिकायत करी।
शुद्ध – इन सबने मेरी शिकायत की।

अशुद्ध – मैंने आज काम पूरा कर लेना है।
शुद्ध –मैं आज काम पूरा कर लूंगा।

अशुद्ध – आपको मिलकर मैं अति प्रसन्न हुआ।
शुद्ध – आपसे मिलकर मुझे अति प्रसन्नता हुई।

अशुद्ध – क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंका।
शुध्द – क्रोध में उसने सारे आभूषण उतार फेंके।

अशुद्ध – तुमने यह क्या करा?
शुद्ध – तुमने यह क्या किया ?

अशुद्ध – यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठा था।
शुध्द – यहाँ एक औरत और एक आदमी बैठे थे।

अशुद्ध – देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर करते
शुद्ध – देश-रक्षा के लिए हम सेना पर निर्भर हैं।

अशुद्ध –विवेकानंद जीवन तक ब्रह्मचारी रहे।
शुद्ध – विवेकानंद आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

अशुद्ध – वहाँ कोई लगभग पाँच सौ लोग थे।.
शुध्द – वहाँ लगभग पाँच सौ लोग थे।

अशुद्ध – उसके पास केवल नाममात्र धन रह गया है।
शुध्द – उसके पास नाममात्र धन रह गया है।

अशुद्ध – सारा माल हाथ-हाथ बिक गया।
शुध्द – सारा माल हाथों-हाथ बिक गया